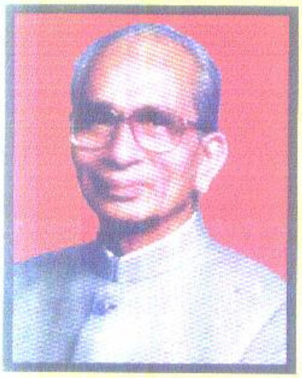

दीपचन्द नाहटा नहीं रहे
सम्मेलन ने एक स्तम्भ खो दिया

मूल्य : 10 रुपये प्रति
वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

सितम्बर २००७ ▸ वर्ष ५७ ▸ अंक ९

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का नवम् अधिवेशन सम्पन्न

अधिवेशन का उद्‌घाटन करते हुए सांसद मो० सलीम, सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा, महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार, प्रान्तीय अध्यक्ष श्री लोकनाथ डोकानिया, प० बंग के नवनिर्वाचित प्रान्तीय अध्यक्ष श्री विश्वनाथ सुल्तानिया, श्री रतन साह, श्री शशिकान्त पुजारी एवं श्री घनश्याम अग्रवाल

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी

मारवाड़ी समाज की धरोहर

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance instructions. And there are Companies that also finace dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solution. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistantly acknowledging the blessings of god makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

Visit us at www.srei.com

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

समाज विकास

अगस्त-सितम्बर 2007

वर्ष 57, अंक 8-9

एक प्रति - 10 रु.

वार्षिक - 100 रु.

संपादक : नंदकिशोर जालान

सहयोग संपादक : शंभु चौधरी

समाज विकास

1. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच
2. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
3. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
4. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
5. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
6. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
7. भारत के कोने-कोने में फैले हुए 9 करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
8. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु।

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वत्वाधिकारी :

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

152-बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता-700 007

फोन : 2268 0319

के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा ऐभल प्रिंटर्स प्रा. लि. कोलकाता - 700 009 में मुद्रित।

सम्मेलन ने एक स्तम्भ खो दिया

सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय महामंत्री श्री राम अवतार पौद्दार एवं राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोडिया ने संयुक्तरुप से एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि - श्री दीपचन्द नाहटा जी के आकस्मिक निधन से सम्मेलन ने एक स्तम्भ खो दिया है। श्री नाहटा जी के निधन से सम्मेलन को भारी क्षति हुई है। सम्मेलन उनकी आत्मा की शांति हेतु परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

क्रमांक

चिट्ठी आई है — पृष्ठ 4

दीपचन्द नाहटा नहीं रहे — पृष्ठ 5

सरल बने आयकर.... — पृष्ठ 6

सम्पादकीय — पृष्ठ 7

कविता:प्रणम्य राजस्थान — पृष्ठ 8

अध्यक्षीय — पृष्ठ 9

अपनी सामाजिक भूमिका. — पृष्ठ 10

प. बंग नवम् अधिवेशन — पृष्ठ 11-17

झारखण्ड प्रान्त — पृष्ठ 18

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी — पृष्ठ 19-29

सीताराम केडिया — पृष्ठ 30

युगपथ चरण — पृष्ठ 31-34

चिट्ठी आई है

मिलनी मान-सम्मान का प्रतीक

मेरे दृष्टिकोण से मिलनी मान-सम्मान का प्रतीक है तथा आपस के सम्बन्ध को और दृढ़ करता है।

सैकड़ों वर्षों से मिलनी के ४ (चार) रुपये की ही मान्य है। पहले मिलनी २ बार ३-३ जगह (साहजी, भती, बड़भती) (कोरथ तथा पहरावनी) में दी जाती थी, मगर अब उसकी सीमा नही है। आपने लिखा कि प्रचलित मुद्रा में ही ४रु मिलनी की देनी पड़ेगी। इससे सामाजिक रीति-रिवाज की नींव को आपने और मजबूत किया है। आप पर समाज को गर्व होना चाहिये। आप साधुवाद के अधिकारी है परन्तु साथ ही आपने लिखा कि चांदी के सिक्के देने है तो चार की जगह पांच, छ., दस ग्यारह देवें। इस वाक्य से बात का वजन हल्का महसुस होता है। खैर। **सज्जनगोठ** : समाज के सभी श्रेणी के चाहे वे उच्च, मध्यम, निम्न श्रेणी के हो इस बात पर सभी सहमत है कि समाज में सामाजिक रीति रिवाज में सुधार की प्रतिक्रिया होनी चाहिये। मेरे विचार से यह प्रथा पीढ़ी-दर पीढ़ी चली आ रही है तथा इसमें कुछ भी नुकसान नही समझ में आ रहा है क्यों कि यह प्रथा भी शादी (विवाह) का एक सम्मान देने वाला भाग है तथा यह भी विवाह में सामाजिक परिपाटी में मान्य है, मगर इसको भी सादगी से निभाया जाना जरुरी है। मेरे नजरिये से सज्जनगोठ, दोनों पक्षों में मधुरता लाती है तथा हर्ष उल्लास का माहोल बन जाता है। जैसे १. सज्जनगोठ में साहजी (लड़केवाले) के सबसे बुजुर्ग को साख जलेबी की रश्म आदायगी में उनका बहुत बड़ा मान बढ़ जाता है, जिससे मधुरता बढ़ती है।

२. सज्जनगोठ में आज भी देस में घर की औरतें जंवाई के नूतने के गीत तथा साहजी के परिवार की लुगाइयां सीठणा गाती है। प्रवासियों में तो गीत प्राय: उठता सा जा रहा है।

सज्जनगोठ में ही दुल्हे (जंवाई) के साथ उनके छोटे छोटे साले वगैरह चाहे वे लड़की (दुल्हन) के मुह बोले भाई ही क्यों न हो, प्रायः सभी अपने जीजाजी के साथ खाना खाने में गर्व महसुस करते है।

यह तो तय है कि मारवाड़ी सम्मेलन के वैवाहिक आचार संहिता में दिये गये सुझावों से समाज के विकास के कार्यों, समाज सुधार की नीतियों में परिवर्तन आयेगा। समाज में चेतना की जागृति होगी।

- देवकीनन्दन जालान (वकील पट्टी)

पू. मा. सम्मेलन, सिलचर शाखा

समाज विकास पत्रिका

समाज का दर्पण

समाज विकास पत्रिका समाज का दर्पण है और समाज को सही दिशा बोध कराने का माध्यम भी। इस समाज के कुछ प्रतिशत ही सम्पन्न है हा कुछ प्रतिशत धनाढ्य की श्रेणी में भी आते हैं। परन्तु अधिकांश तो हैन्ड टू माउथ हैं। सर्वसाधारण मारवाड़ियों को मैंने बराबर कागज की मिलनी लेते-देते ही देखा है और वे दोनों समधी प्रसन्नता पूर्वक गले मिलकर खुशी का इजहार करते हैं। इसलिये सच तो यह है कि प्रचलित मुद्रा की मिलनी ही यथावत चलेगी तथा कुछ धनाढ्य परिवारों में चान्दी की भी चलेगी। यह बात मैंने साहस बटोरकर यहां लिखी है। चूंकि समाज विकास अपना मुखपत्र है और पाठक गण भी अपने हैं अतः जो धरती का सच मैंने अपनी आँखों देखा है वही लिखा है। इसलिये लिखना सहज है परन्तु इसे कार्यरुप में परिणित करना कठिन है। मिलनी स्थिति तथा परिस्थितिनुसार यथावत कागज की तथा चान्दी की दोनों चलेगी। वैसा फर्क मिलनी और सांख जलेबी में भी रहेगा कोई सांख जलेबी में सौ का नोट, कोई चांदी का सिक्का तो कोई चुपचाप गिन्नी भी सरका देगा यह हम रोक नहीं सकते - अतः मिलनी के चार सिक्कों पर इतना ज्यादा जोर न देकर विवाह के ऐसे अनावश्यक नेगों को ही समाप्त कर दिया जाय जो लड़की वालों के लिये चिन्ता का विषय बन जाते हैं।

-रामनिरंजन गोयनका

शांति निकेतन, गुवाहाटी (असम)

दीपचन्द नाहटा

जन्म ११ नवम्बर १९२६ - देहांत २४ सितम्बर २००७

गांधीवादी दीपचन्द नाहटा नहीं रहे

चुरु जिले के अग्रणी कस्बे सरदारशहर के प्रमुख नाहटा परिवार में श्री दीपचन्द नाहटा का जन्म ११ नवम्बर १९२६ को हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा सरदारशहर में सम्पन्न हुई। तदुपरान्त आप बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्र बनें। इसके बाद कलकत्ता विश्वविद्यालय से आपने बी. कॉम. की परिक्षा उत्तीर्ण की। बचपन से ही आपका विश्वास महात्मा गांधी के आदर्शों में था। साहित्य के क्षेत्र में भी गांधीवादी विचारधारा के धनी श्री नाहटा जी का विशेष योगदान रहा। राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति के विकास हेतु सदैव सक्रिय रहे हैं। आप राजस्थानी साहित्य संस्थान के संस्थापकों में से एक है। सामाजिक सेवा के उद्देश्य से श्री नाहटा ने कुन्दनमल दीपचन्द नाहटा चैरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना की। इस ट्रस्ट के द्वारा गांधी विद्या मन्दिर में राजस्थान सरकार के स्कीम के अन्तर्गत श्रीमती मोहिनी देवी नाहटा (धर्मपत्नी श्री दीपचन्द नाहटा) की स्मृति में छात्रावास का निर्माण भी कराया। शिक्षा काल के तुरन्त बाद ही आप चाय उत्पादन (टी गार्डेन) के अपने पुस्तैनी कार्य से जुड़ गये। इन्होंने औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े हुए राजस्थान प्रदेश में अपनी औद्योगिक ईकाईयों को लगाकर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये। आप शहर की कई सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े रहे। जिनमें प्रमुख है श्री जैन सभा (कलकत्ता), राजस्थान परिषद, विचार मंच, महावीर सेवा सदन, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, गांधी दर्शन समिति, हरिजन सेवक संघ, अखिल भारतीय रचनात्मक समाज (प. बंगाल शाखा), मरुधारा, मनोविकास केन्द्र, पारिवारिकी, मानव सेवा संघ, इंडियन टी प्लानटर्स एसोसियेशन, नेशनल एलायंस आफ यंग एन्टरप्रेन्योर, प. बंगाल इंडस्ट्रीयल लायजन बोर्ड, वेस्ट बंगाल बोर्ड आफ पोस्ट एण्ड टेलीग्राफ, भारत चेम्बर आफ कामर्स, कलकत्ता चेम्बर आफ कामर्स, टी एसोसियेशन आफ इण्डिया आदि अनेकों सामाजिक व औद्योगिक संस्थानों के सक्रिय सदस्य भी रहे।

विभिन्न सद्गुणों के प्रतीक अनेक विभूतियां है, मगर राष्ट्र व समाज सेवा, साहित्य और सद्भाव, उद्योग और व्यवसाय क्षेत्र के उत्कृष्ट गुणों का समावेश किसी एक ही व्यक्तित्व में होना अत्यन्त विरल है। बड़े ही दुःख के साथ लिखना पड़ रहा है कि श्री दीपचन्द नाहटा जी दिनांक २४.९.२००७ दिन सोमवार की सुबह चिर निद्रा में सो गए।

गोष्ठी

सरल बने आयकर रिर्टन : सम्मेलन

कर कानूनों के पालन के लिए आयकर रिर्टन फार्म को सरल बनाना जरुरी है। यह बात अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से आयोजित एक गोष्ठी मे सांसद सुधांशु शील ने कही। संस्था के अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने कहा कि पांच लाख रुपए तक की आय वाले व्यापारियों के मामले मे पुराना सरल फार्म फिर से लागू करना चाहिए। जुगल किशोर जैथलिया ने नए रिर्टन आईटीआर, ४ में चाही गयी विस्तृत जानकारियों को पेचीदा व अनावश्यक बताया। कर सलाहकार नारायण जैन ने कहा कि नए रिर्टन में विस्तृत जानकारी ऐसे करदाताओं को देनी पड़ती है। जिनके लिए खाते पत्र रखना कानूनन अनिवार्य है।

संस्था ने वित्तमत्री से आग्रह किया है कि व्यापारियो के मामले में खाते पत्र रखने के लिए बिक्री राशि की वर्तमान सीमा को १० लाख से बढाकर ४० लाख तथा आय वर्तमान राशि १ लाख २० हजार रुपया को बढ़ाकर पांच लाख रुपए कर देना चाहिए। निर्दिष्ट पेशेवर लोगो के मामले में सकल रकम प्राप्ति की वर्तमान राशि १ लाख ५० हजार की बजाय १० लाख रुपया करना उचित होगा।

अनिवार्य टैक्स आडिट के उद्देश्य से बिक्री की वर्तमान राशि ४० लाख रुपए को बढाकर कम से कम एक करोड़ रुपए करने का आग्रह किया है। भारत चेम्बर आफ कामर्स के अध्यक्ष पी. आर. अग्रवाल ने सुधांशु शील से आग्रह किया कि वितमंत्री से इस मामलो पर बात करें। सम्मेलन की तरफ से एक पत्र भी वित्त मंत्री को भेजा गया है। राष्ट्रीय महामत्री श्री राम अवतार पोद्दार ने धन्यवाद दिया। ★

सम्पादकीय

कर्मठ व समर्पित कार्यकर्त्ताओं का अभाव?

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के अस्पताल भ्रमण के समय यह बात उभरकर समाने आयी कि समाज मे कर्मठ व समर्पित कार्यकर्त्ताओं का अभाव महसुस होता है। यह अभाव किसी मांग या पूर्ति करने जैसी कोई वस्तु नहीं है जो इसकी पूर्ति किसी एक शहर से दूसरे शहर में की जा सके, यह काम संस्था के योग्य पदाधिकारी स्वतः अपनी संस्था के अन्दर से समाज के युवकों को या फिर उनके अन्य संस्था मे दिये योगदानो को देख कर अपने से जोड़ते हैं एव धीरे-धीरे उनके कन्धो पर नई जिम्मेदारियाँ सौपी जाती है उनका समय समय पर आवलोकन कर समाज मे उनकी पहचान बनाई जाती है। परन्तु पिछले तीन दशको से कोलकाता शहर की कई संस्थाओ के पदाधिकारी इस तरह का कोई प्रयास नही करते पाये गये है। कई संस्थाओ ने तो नये सदस्य बनाने ही बन्द कर दिए। सोसाइटी हो या मारवाड़ी सम्मेलन यह किसी एक संस्था की बात नहीं हम सबको यह सोचना चाहिए कि क्या वास्तव मे, समाज मे कर्मठ व समर्पित कार्यकर्त्ताओं का अभाव झलकता है या कहि हम ही इसके लिए खुद जिम्मेदार तो नही?

यह मानते हुए कि बड़े शहरो मे नवयुवकों की नई समस्याएँ है, एकल परिवार व्यवस्था ने उनके कन्धों को और भी अधिक लाचार बना दिया है। नौकरी-पेशा करने वाले के लिए तो सामाजिक संस्था में सेवा देना तो नामुमकिन सा हो गया है।

कारोबारी युवकों या फिर प्रोफेशनल युवा लोगों के लिए थोड़ा बहुत संभव भी है तो उनकी समय सीमा कुछ हद तक स्वतंत्र नही है। भौतिकतावाद की दौर में वे इतने उलझ चुके हैं कि समाजिक कार्यों के प्रति इनकी रुची प्रायः समाप्त हो चुकी है। फिर भी समाज मे समर्पित व कर्मठ कार्यकर्ताओ का किसी भी प्रकार का अभाव या शुन्य हो गया इस बात से कदापी सहमत नहीं हो सकता। शहर के पास ही गंगा सागर मेला, तारकेश्वर व देवघर, सावन में कांवरियो की सेवा मे तत्पर युवाओं को देखकर यह मानना तो और भी असम्भव सा लगता है। नई संस्थाएँ खुलती जा रही है। इन संस्थाओ में कर्मठ व समर्पित कार्यकर्त्ताओं को देखा जा सकता है जबकि पुरानी संस्थाओ में इसका अभाव बना हुआ है यह बात स्वयं मे विरोधाभास, पैदा करती है। यदि पूर्वजो ने हम पर विश्वास नहीं किया होता तो हम आज समाज में नही पहचाने जाते हमें भी नये युवकों की तलाश करनी चाहिए। मारवाड़ी समाज मे जिस तरह बच्चा जन्म से ही न सिर्फ व्यवसायी बल्कि समाज सेवा की भावना भी उसको विरासत मे मिलती है। सम्भव है कुछ अपवाद हो परन्तु इस भय से कि संस्था को नुकसान न हो जाए, यह बात ही संस्था के लिए आत्मघाती है। समय रहते ही योग्य युवको को संस्था से जोड़ने का क्रम जारी रहना चाहिए।

मारवाड़ी समाज में अच्छे व योग्य नवयुवक युवतियाँ भरे है, शिक्षित तो हैं ही, संस्कारी भी है, बस उनको अपने से जोड़ने की जरुरत है।

कविता

प्रणम्य राजस्थान

जय वीरता करती रहती अपना युग अभियान है।
जिस धरती का सारा पानी ही पी गयी कृपाण है।।
जिसके दम से टिका हुआ यह अपना हिन्दुस्तान है।
उस धरती को नमन करो वह प्यारा राजस्थान है।।
जहां ब्रह्म-विद्या ब्रह्मा की पुष्कर को सिंगारती।
तीन लोक की प्रज्ञा जिसकी सदा उतारे आरती।।
गुरु वशिष्ठ की तप: भूमि जो लोक-शोक संहारती।
रेतीली धोरां री धरती बोले भारत भारती।।
जहाँ ब्रह्म ही सत्य और यह जग लगता नि:सार है।
और वेद की ऋचा-ऋचा करती जिसका श्रृंगार है।।
आध्यात्मिक चिन्तन का शाश्वत जहां उमड़ता ज्वार है।
जिसका परिचय और नही केवल नंगी तलवार है।।
अपरम्पार तेज दिनकर - सा जिस भू की पहचान है।
उस धरती को नमन करो वह प्यारा राजस्थान है।।
जहाँ पद्मिनी के जौहर की होती जय जयकार है।
लपटों के ही वसन जहाँ की नारी का सिंगार है।।
जहाँ आततायी खिलजी की पशुता जाती हार है।
और सती का तेज देवियो का बनता गलहार है।।
जहाँ भवानी दुर्गा लेती घर घर मे अवतार है।
और सुहागिन मुण्डमाल से करती निज श्रृंगार है।।
जहां कमर मे प्रिय के कसती बालाएँ तलवार है।
जिनकी सेजे फूल नही बस शूल और अंगार है।।
जिनके महातेज से होता तेजवान दिनमान है।
उस धरती को नमन करो वह प्यारा राजस्थान ।।
जहाँ रेत के खेत, खेत मे उगती है कुरबानियाँ।
तलवारों की फसलें बोती रहती जहाँ जवानियाँ।।
जिसका पानी भी कायर मे भरता नई रवानियाँ।
हल्दीघाटी, कोटा, बूंदी कहते यही कहानियाँ।।
जहाँ कण्ठ से रगड़ देखते तलवारों की धार है।
जहां जन्मते अस्सी घावों वाले नर बरियार है।।
गोरा बादल जयमल पत्ता रचते बलि त्यौहार है।
बाण्डोली से पूछो अब भी कौन रहा ललकार है।।
रुद्र धरा जो सदा जागती आयी युद्ध-मसान है।
उस धरती को नमन करो वह प्यारा राजस्थान ।।
जहां कुंवारी पीड़ा गाती पनघट की रस बोलियाँ।
ढोला मरवण संग मूमल को सहलाती है डोलियाँ।।
अंगारों से अधिक जहाँ जलती सुहाग की रोलियाँ।
मेहदी नवल सुहागिन कर की जलती जैसे होलियाँ।।
चिर प्यासे चकोर रह जाते प्यासी जहां चकोरियाँ।
अनसुलझी ही रह जाती है जहाँ प्रेम की डोरियाँ।।
जहाँ प्रियतमा पुष्प सेज पर गाती रण की लोरियाँ।
तलवारो को सौत मानती जिस धरती की गोरियाँ।।
जहाँ अबोली क्रौंच-पीर को मिला न अब तक गान है।
उस धरती को नमन करो वह प्यारा राजस्थान है।।
यह वह राजस्थान है यह पीड़ा का गान है।
यह जौहर की शान है पौरुष का अभिमान है।।
सतियो का वरदान है शूरों का अरमान है।
सचमुच राजस्थान आज तो भारत की पहचान है।।

- डा० अरुण प्रकाश अवस्थी

लघु कथा

गरीबों ने दी सफलता

यह कोई आवश्यक नहीं कि मनुष्य साधन सम्पन्न हो जाने की अवस्था में ही प्रगति कर सके। उसमें लगन, परिश्रम तथा धैर्य है तो सफलता उसे प्राप्त होगी ही। अमरीका के जार्ज ईस्टमैन कम पढ़े-लिखे थे। इस कारण वे एक संस्था में चपरासी की नौकरी करने लगे। दिन भर तो कार्यालय के काम में जी जान से जुटे रहते और घर जाने के बाद रात को कई कई घंटे जागकर फोटोग्राफी का सिद्धान्त जानने तथा उसके प्रयोग में लगे रहते। जो लोग इस विषय में उनका मार्ग दर्शन कर सकते थे उन्हें खोजते तथा इस कार्य में आयी उलझनों के हल ढूँढने में सदा प्रयत्नशील रहते तथा सम्पर्क बनाते रहते।

लगन, धैर्य, परिश्रम तथा उत्साह उन्हें सफलता के मार्ग पर अग्रसर करता चला गया। परिणाम यह हुआ कि उन्हें इस दिशा में प्रवीणता प्राप्त हुई और वे विश्व विख्यात **कोडक कम्पनी** के संस्थापक बने। इस कार्य में वे अकेले थे। अतः धन भी खूब कमाया।

अन्त में उन्होंने अपने जीवन की गाढ़ी कमाई दो करोड़ डालर एक इंजीनियरिंग कालेज की स्थापना में दान कर दी और उसी गरीबी को साथ लेकर विदा हुए, जिसे लेकर वह जन्मे थे।

त्याग का सम्मान

एक था कृपण, इतना कंजूस कि अपने आप पर भी धेला खर्च नहीं करता था। लाखों का स्वामी था, फटे कपड़े पहने रहता। केवल एक अच्छी बात थी उसमें। वह सत्संग में जाता था। वहाँ भी उसे कोई पूछता न था। सबसे अन्त में जूतों के पास बैठ जाता। कथा सुनता रहता। भोग पड़ने का दिन आया, तो सब भेंट चढ़ाने कोई न कोई वस्तु लाये। वह कृपण भी एक मैले से रुमल में बाँध के कुछ लाया। सब लोग अपनी वस्तु रखते गये, वह भी आगे बढ़ा। अपना रुमाल खोल दिया उसने। उसमें अशर्फियाँ थी, रत्न और सोना। इन्हें पण्डितजी के समक्ष उँडेलकर वह जाने लगा। पण्डितजी ने कहा नहीं नहीं सेठजी! यहाँ नहीं यहाँ मेरे पास बैठो। सेठजी ने बैठते हुए कहा - यह तो रुपयों का सम्मान है पण्डितजी, मेरा सम्मान तो नहीं?

पण्डितजी ने कहा भूलते हो सेठजी! रुपया तो तुम्हारे पास पहले भी था। यह तुम्हारे रुपये का नहीं, दान एवं त्याग का सम्मान है।

अध्यक्षीय

दीपचन्द नाहटा (१९२६-२००७)

सम्मेलन ने अपना एक स्तम्भ खो दिया

२४ सितम्बर २००७, जब नाहटा जी के निवास स्थान से फोन पर दीपचंद जी नाहटा के आकस्मिक स्वर्गवास का दुःखद समाचार प्राप्त हुआ तो कानों पर विश्वास नहीं हुआ। दो दिन पहले ही ओसवाल भवन में एक समारोह में उपस्थित थे, कल ही उनका एक पत्र भी प्राप्त हुआ था।

अजातशत्रु, शालीनता एवं समय की प्रतिमूर्ति, गांधीवादी, मृदुभाषी, शलाका पुरुष, समाज सुधारक, समाज सेवी श्री दीपचंद नाहटा जी एक विरले व्यक्तित्व के धनी थे।

यह मेरा सौभाग्य रहा कि मुझे उनके साथ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन में नजदीकी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। १९९३ में दीपचन्द जी जब राष्ट्रीय महामंत्री बने तब मुझे उप-महामंत्री निर्वाचित किया गया। १९९३ से १९९७ तक उनके दिशा-निर्देश पर मुझे कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, वह एक उपलब्धि थी।

> सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय महामंत्री श्री राम अवतार पौद्दार एवं राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने संयुक्तरुप से एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि - श्री दीपचन्द नाहटा जी के आकस्मिक निधन से सम्मेलन ने एक स्तम्भ खो दिया है। श्री नाहटा जी के निधन से सम्मेलन को भारी क्षति हुई है। सम्मेलन उनकी आत्मा की शांति हेतु परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

कथनी एवं करनी में समानता के प्रतीक श्री नाहटा सदैव दिखावा एवं आडम्बर का लेखनी से विरोध किया। उनका नारा था - विलास विनाश है। विनम्र एवं मधुर वाणी के धनी श्री नाहटा समाज को अगाह करने से कभी नहीं हिचकते थे - कितनी ही बार उन्होनें चेतावनी भी दी मारवाड़ी सम्मेलन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता, लगाव एव समर्पण अदभूत रहा है। अस्वथता के बावजूद श्री नाहटा जी हर बैठकों में उपस्थित होते थे। मेरे से बराबर फोन पर सम्पर्क रहता था। लगन एवं निष्ठा के प्रति समर्पित श्री नाहटा जी सम्मेलन के प्रति तन, मन, एवं धन से समर्पित थे।

आप जीवन एवं जगत को तटस्थ भाव से देखते थे। उन्हें कभी संयम खोते अथवा क्रोधित नहीं देखा। हर स्थित में वे सदैव शान्त एवं संयमित रहते थे। गांधीवादी विचारधाराओं ने उनके जीवन में गहरी छाप छोड़ी थी। उनके प्रायः तमाम लेखो एवं विचारों में गांधी जी के विचारधाराओं की झलक मिलती थी।

मारवाड़ी सम्मेलन पिछले कई महीनों से उनके अभिनन्दन ग्रंथ के प्रकाशन पर कार्य कर रहा था। उनका जीवन एक अभिनन्दनीय व्यक्तित्व था।

श्री दीपचन्द नाहटा के दुःखद निधन से मारवाड़ी सम्मेलन ने अपना एक स्तम्भ खो दिया है।

- सीताराम शर्मा

अपनी सामाजिक भूमिका तय करें

राम अवतार पोद्दार, महामंत्री - अ. भा. मा. सम्मेलन

समाज और सामाजिक संस्थानो के प्रति हमारी जिम्मेदारियां क्या है? यह एक प्रश्न है और इसका कोई एक सटीक उत्तर मिल पाना मुश्किल हैं क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की सोचने की शैली, काम करने का तरीका अलग-अलग है। फिर भी सामाजिक जीव होने के नाते यह अपेक्षा की जाती है कि हम अपने समाज और सामाजिक संस्थानों के विकास में अपनी भूमिका निभायें।

इस प्रसंग मे मुझे महाभारत की एक कथा का स्मरण हो आता है। पितामह भीष्म शर-शैय्या पर आखिरी सांसें गिन रहे थे। इसी समय भीषण रक्तपात और कुटुम्बियों के मृत्यु से आहत युधिष्ठिर उनके पास आए और कहा कि वे राज-काज नही करके सन्यास लेना चाहते हैं। इसके प्रत्युत्तर में पितामह भीष्म ने युधिष्ठिर से कहा कि सन्यास लेने की भावना कायरता का द्योतक है। मनुष्य को धरती पर अपने कर्मो से ऐसा कुछ करना चाहिए कि आने वाली पीढ़ी उसे सदा याद रखें। इसी क्रम में पितामह युधिष्ठिर से यह भी कहते हैं कि मनुष्य किस तरह सुख प्राप्त करे, इसके दो रास्ते हैं। एक रास्ता तो यह है कि मनुष्य स्वयं अपनी मुक्ति का उपाय करें एवं स्वयं ही सुखी बनें। दूसरा पथ यह है कि अपने विवेक और बल को औरो को प्रदान करें एवं अपने साथ बहुत से लोगों को सुखी बनाकर जीवन के वास्तविक सुख का अधिकारी बनें। हम अपने जीवन में किस प्रकार का सुख चाहते हैं यह हमारे अपने विवेक पर निर्भर करता है।

एक मारवाड़ी के रुप मे हमारी परंपरा यह रही है कि हम कभी भी सिर्फ स्वयं के लिए नही जिये बल्कि हमेशा से इस बात की कोशिश की है किस तरह अपने सदृश औरों के जीवन को भी उन्नत बनाएं। इसी भावना के चलते हमारे पूर्वजो ने सामाजिक संगठनों और संस्थानों की नींव डाली ताकि सामूहिक रुप से समाज के हित में कार्य करना संभव हो सके। पूर्वजों की अमूल्य धरोहरों को बचाएं व बनाएं रखना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है,साथ ही मये प्रतिष्ठानों के निर्माण की भी। समाजिक प्रतिष्ठान हमारी पहचान को नया आयाम देते हैं तो समाजाकि संगठन नये प्रतिष्ठानों के निर्माण की हममें ताकत।

अखिल भारतवर्षीय मारवाडी सम्मेलन के मंच से हमने सदा यह कोशिश की है कि मारवाड़ी समाज के लोग संगठित हो और ऐसे कार्य हाथ में लें जो इस समाज की प्रतिष्ठा में श्रीवृद्धि करें। चूंकि सम्मेलन का विस्तार राष्ट्रीय स्तर पर है इसलिए जब भी सम्मेलन से जुडे किसी व्यक्ति ने महत्वपूर्ण कार्य करने का बीडा उठाया है तो उसकी चर्चा हुई है दूसरों से प्रेरणा मिली है। इसलिए यह आवश्यक है कि अधिक से अधिक लोग सम्मेलन से जुड़े और वैचारिक स्तर पर प्रबुद्ध लोग बड़े कार्यक्रम हाथ में ले तभी मारवाड़ी समाज और सम्मेलन की सार्थकता है। ★

प० बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन : नवम् अधिवेशन

यह लोकनाथ से विश्वनाथ की यात्रा है

- मो० सलीम, सांसद

आडम्बरों से समाज को मुक्त किया जाय

- सीताराम शर्मा

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन - नवम् अधिवेशन के अवसर पर बोलते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, बाये से नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री विश्वनाथ सुल्तानिया, स्वागताध्यक्ष श्री श्यामलाल डोकानिया, श्री विजय गुजरवासिया, श्री लोकनाथ डोकानिया, श्री रतन साह, सांसद मो० सलीम, श्री शशिकान्त पुजारी (आई.पी.एस), श्री घनश्याम अग्रवाल

कोलकाता, आज दिनांक २३ सितम्बर २००७ को साल्ट लेक स्थित साल्टलेक सांस्कृतिक संसद के सभागार में प० बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का नवम् अधिवेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। सुबह भारी वर्षा के बावजूद प्रतिनिधियों का रजिस्ट्रेशन प्रातः ९ बजे से शुरु कर दिया गया। कोलकाता शहर में यह दूसरा अधिवेशन है। २५ वर्ष पूर्व पहला अधिवेशन हुआ था। **स्वागताध्यक्ष श्री श्यामलाल डोकानिया** ने सर्वप्रथम आये हुए सभी प्रतिनिधियों का स्वागत किया। अपने भाषण में आपने कहा कि समाज शादी-विवाह के समारोहों में सादगी लाये। इसके पूर्व आये सभी हुए अतिथियों को माल्यप्रदान कर स्वागत किया गया। **उद्घाटनकर्त्ता सांसद मो० सलीम** ने उद्घाटन भाषण देते हुए कहा कि वे मारवाड़ी सम्मेलन के कार्यकलापों से जुड़े हुए है। कुछ लोग कहते हैं आप दिल्ली वाले हो गए, दिल्ली वाले कहते है कि आप कोलकाता वाले हो गए, मैं तो कहता हूँ न तो मैं दिल्ली वाला हूँ न ही कोलकाता, मैं तो आपके दिल में रहता हूँ। **नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री विश्वनाथ सुल्तानिया** को बधाई देते हुए कहा कि न तो यह सिर्फ कांटों का ताज है न ही सिर्फ गुलाबों का पश्चिम बंग सम्मेलन की

प० बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन - नवम् अधिवेशन के अवसर पर बोलते हुए बायें से सांसद मो० सलीम साहब, भूतपूर्व उपाध्यक्ष श्री रतन साह, राष्ट्रीय महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार व श्री शशिकान्त पुजारी

राजनीति की तरफ इशारा करते हुए कहा कि यह गुलाब के साथ साथ कांटों का भी ताज है। साथ ही सभी का ध्यान खिंचते हुए कहा कि **म्हारो लक्ष्य - राष्ट्री प्रगति** - इस एक वाक्य में कितनी बातें समाहित है - उसमें आपकी भाषा, आपका लक्ष्य एवं राष्ट्र के प्रति आपके योगदान एवं संस्था का चिन्तन साथ ही साथ संस्था की गम्भीरता का दर्शन हो जाता है।

युवावर्ग की तरफ इशारा करते हुए **सांसद मो० सलीम** ने कहा कि मैं नहीं समझता कि इस युग के सभी युवावर्ग गलत हैं कुछ हो सकते हैं यह हमारे युग में भी थे। हमारा सामाजिक दायित्व बनता है कि नये वर्ग को अपने साथ जोड़ें, एक समय था हम सिर्फ एक या दो चेनालों से काम चला लेते थे। आज इनके पास रिमोट कन्ट्रोल है, एक बटन दबाते ही सौ से अधिक चैनल वे देख सकते है। अपने सारगर्भित भाषण में संस्कृत के एक श्लोक - **तमसो मा ज्योतिर्गमय गमय:** का उल्लेख करते हुए आपने कहा कि विज्ञान ने काफी सफलता प्राप्त की है परन्तु एक बल्ब से दूसरा बल्ब नहीं जला सकते। हम एक दीये से दूसरे दीये को जला सकते है, दिन के उजाले में भी हम दीप प्रज्ज्वलित कर समारोह का उद्घाटन करते हैं यह हमारी संस्कृति को दर्शाती है। हम कई बार अपने सोच को तैयार कर नई बातों को लाते हैं, हम इतिहास से शिक्षा ले सकते हैं परन्तु इतिहास में नहीं जा सकते। हम भविष्य की तरफ जा सकते है एव वर्तमान निर्माण भी। राजस्थानी भाषा की बात करते हुए आपने कहा कि हमें न सिर्फ अपनी भाषा, संस्कृति के प्रचार एवं अपनी भाषा बचाये रखने का प्रयास करते रहना चाहिए। इस देश में ही नहीं विश्वभर में बड़ी तेजी से भाषा एवं संस्कृति पर आक्रमण हो चुका है। धर्म की बात को अस्वीकार करते हुए कहा कि बंगलादेश इसका ताजा उदाहरण है जहां लोगों ने धर्म के नाम पर एक न होकर भाषा को बचाये रखने के लिये भाषा के नाम पर नया राष्ट्र का निर्माण किया था। राजस्थानी भाषा मान्यता के लिए किये जा रहे प्रयास को संसद के बाहर एवं भीतर हर जगह आपने समर्थन देने का संकल्प दोहराया। अपने ओजस्वीपूर्ण भाषण में मो० सलीम ने कहा कि लोकगीत, लोकगाथा, लोक जीवन, जन्म से मिलती है, राजस्थानी समाज को मेहनत व उद्यमशीलता भी जन्म से मिल जाती है। चुंकी हर प्रान्त में पानी बगल में मिल

प० बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

सांसद मो० सलीम, प० बंग प्रादेशिक सम्मेलन द्वारा प्रकाशित डायरेक्टरी का विमोचन करते हुए

श्री लोकनाथ डोकानिया द्वारा नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री विश्वनाथ सुल्तानिया को पदभार सौंपते हुए

जाता है जबकि राजस्थान में पानी भी पीने के लिए सैकड़ों फीट जमीन खोदनी पड़ती है। इस अवसर पर बतौर **प्रधान अतिथि अ. भा. मारवाड़ी सम्मेलन के सभापति श्री सीताराम शर्मा** ने कहा कि १९३५ में सम्मेलन की स्थापना हुई एवं १९३७ में इस प्रान्त का गठन हुआ। कई उतार-चढ़ाव के साथ यह कार्य करती जा रही है। सम्मेलन के स्लोगन **म्हारो लक्ष्य राष्ट्र री प्रगति** पर आपने कहा कि हमारी संस्था के पूर्व अधिकारी कितने दूरदर्शी थे यह सिर्फ इस स्लोगन से ही अंदाज हो जाता है। सम्मेलन कभी प्रान्तीयता व आरक्षण की बात नहीं करता, हमेशा हमारा उद्देश्य राष्ट्र की एकता रही है। सम्मेलन का प्रयास रहा कि समाज की खूबियों को बनाये रखे, साथ ही समाज की कमजोरियों को सुधार कर खूबियों को और खूबसूरत बनाये। आज हमारे समाज में लड़कियाँ कई मायने में आगे बढ़ चुकि है, एक समय था जब हम शिक्षा के झूठे प्रमाण पत्र बनवाकर बच्ची की शादी किया करते थे। आज लड़कियाँ अधिक पढ़ी-लिखी पाई जाती है-बनिस्पत लड़कों के। अपने पूर्व वक्ता श्री शशिकान्त पुजारी के भाषण का जिक्र करते हुए आपने कहा कि इन्होंने खुलकर इस बात को स्वीकार किया कि समाज के लोग आडम्बर की तरफ झूके हैं, सम्मेलन चाहता है कि इस तरह के कार्यक्रम लेकर, आडम्बरों से समाज को आडम्बर मुक्त बनाया जाना चाहिए। आपने उच्च शिक्षाकोष की जानकारी देते हुए कहा कि गत माह उसकी एक बैठक में कुछ आवदेन पत्र आये थे जिसमें से एक बच्ची को दो लाख का अनुदान देने हेतु स्वीकार दर लिया गया - सम्मेलन का प्रयास रहेगा कि समाज का कोई बच्चा अर्थ के अभाव में उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रहा हो तो उसकी आवश्यकता को मद्देनजर रखते हुए उपलब्ध कोष से उसे हर संभव सहायता दी जा सके। राजनैतिक चेतना की बात करते हुए आपने बताया कि सम्मेलन का प्रयास है कि मारवाड़ी समाज अपने लोकतांत्रिक जिम्मेदारियों को भी पूरा करें, समाज को वोटर बनने के साथ साथ वोट डालने का भी आग्रह किया।

सम्मेलन के राजनैतिक कार्यक्रम को पुनः स्पष्ट करते हुए आपने कहा कि सम्मेलन समाज में राजनैतिक चेतना लाना चाहती है इसका अर्थ यह नहीं कि आप अपना काम धन्धा छोड़ कर राजनीति करना शुरु कर देवें। वोटर लिस्ट में अपने व अपने परिवार के सदस्यों का नाम दर्ज कराना, चुनाव के दिन मतदान की प्रक्रिया में सपरिवार भाग लेना जैसे कार्यो को भी समाज प्रधानता देवें। आगे आपने कहा कि यह लोगों में गलत धारणा है कि मारवाड़ी समाज का हर व्यक्ति धनी है। जबकि इस समाज में भी अन्य समाज की तरह हर वर्ग के लोग है। सम्मेलन समाज में समरसता का कार्य करता है। आपने श्री लोकनाथ डोकानिया को न सिर्फ सम्मेलन के समर्पित कार्यकर्ता बताया बल्की आपने कहा कि ये सोते-उठते-बैठते हर समय सम्मेलन व समाज को संगठित करने की बात सोचते है। नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री विश्वनाथ सुल्तानिया जी को बधाई देते हुए आशा की कि प्रान्त को संगठित कर नया स्वरुप प्रदान करेंगे, जिससे प्रान्त को और अधिक शक्तिशाली बनाया जा सकेगा।

प्रधानवक्ता के रुप में श्री रतन शाह ने कहा कि मारवाड़ी समाज कौन है? यह बताने की जरुरत है हमने कलम

प० बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री रामगोपाल अग्रवाल, श्री अशोक काजड़िया (दुर्गापुर), श्री नन्द किशोर अग्रवाल, श्री विजय कानोड़िया, श्रीमती बिमला डोकानिया

कम उठाई, कलमकारों को पाल कर लिखाने की बजाय खुद लिखने का प्रयास करें, समाज ने बड़े-बड़े समाचार पत्र निकाले, कुछ लागो ने इसका गलत प्रयोग किया, रामाज को बदनाम करने का कार्य भी किया गया। समाज की सही तरवीर प्रस्तुत नहीं की गयी। समाज को कलम के महत्त्व को प्राधनता देनी ही होगी। आपने राजस्थानी भाषा को मान्यता देने हेतु पुनः सरकार से निवेदन किया कि हमारी भावना पर सरकार ध्यान दें एवं तत्काल ही सराद में इस प्रस्ताव को पारित करें। इस अवरार पर सम्मेलन के **महामंत्री श्री राम अवतार पोदार** ने श्री लोकनाथ डोकानिया के कार्यो का उल्लेख करते हुए का हि, बंगाल प्रान्त को इन्होंने नया स्वरुप प्रदान किया है। इससे पूर्व जो भी आय वे रास्था को सही तरह से प्रस्तुत करने में असफल रहे थे। इस अवसर पर विशिष्ट 'वक्ता के रुप में राजस्थान के आइ.पी.एस. अधिकारी **श्री शशिकान्त पुजारी** ने कहा कि राजस्थानी जिस प्रान्त में भी बसे वे वहाँ के हो गए फिर भी अपने मूल स्थान को नहीं भूले। व्यवसाय के साथ साथ सेवा का इतना बड़ा कार्य किसी भी अन्य समाज में कम ही देखने को मिलता है। आपने अपने अनुभवों को बाँटते हुए कहा कि आजकल समाज के नवयुवकों में कुछ भटकाव दिखाई पड़ता है, वे आडम्बर को ज्यादा महत्व देने लगे हैं। मारवाड़ी समाज एक प्रवासी समाज है इस बात को भी ध्यान में रखना चाहिए।

श्री विजय गुजरवासिया : ने समाज में एकता के लिए सभी को सम्मेलन में संगठीत होकर कार्य करने की जरुरत पर बल दिया। आपने कहा कि सम्मेलन को और अधिक संगठीत करना समय की जरुरत भी है।

श्री घनश्याम अग्रवाल ने कहा कि मारवाड़ी समाज को एकसुत्र मे पिरोने में आप हर पल सम्मेलन के साथ हैं सम्मेलन के प्रयास सराहणीय है इसे हर तरह से सबल किया जाना चाहिए।

एक बजकर तीन मिनट पर श्री लोकनाथ जी डोकानिया ने श्री विश्वनाथ सुल्तानिया को साफा पहनाकर उनका स्वागत किया एवं अपना अध्यक्ष पद का भार सौंपा। इस अवसर पर श्री डोकानिया जी ने श्री विष्णुकान्त शास्त्री जी की कविता :

बड़ा काम कैसे होता है, पूछा मेरे मन ने,
बड़ी साधना, बड़ी तपस्या, बड़ा हृदय अनुगामी।
किन्तु अहं छोटा हो, जिससे सहज मिले सहयोगी,
दोष हमारा, श्रेय प्रभु का, हो प्रवृति कल्याणी।।

का उल्लेख करते हुए कहा कि श्री सुल्तानिया जी एक मिलनसार व्यक्ति हैं, आपने आशा की, कि संगठन के विस्तार में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहेगा। इस अवसर पर वर्ष २००४-०७ की सदस्यता डायरेक्टरी का विमोचन मो० सलीम के हाथों से कराया गया।

नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री विश्वनाथ सुल्तानिया : ने कहा कि मारवाड़ी सम्मेलन को ग्रास रुट से काम करना होगा, विवाह सम्बन्ध, शिक्षा, राजनैतिक जागरुकता, आडम्बर एवं भाषा पर कार्य करने की विशेष जरुरत पर बल देते हुए आपने कहा कि इन कार्यों को सम्पादन करने के लिए सर्वप्रथम संगठन को और अधिक मजबूत करने की जरुरत है।

प० बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री श्यामलाल डोकानिया, श्री गोपी घुवालिया, श्री विश्वनाथ सिंघानिया, श्रीमती पुष्पा भदानी, श्री आत्माराम तोदी

द्वितीय सत्र :

उद्घाटन सत्र पश्चात दोपहर तीन बजे से दूसरा सत्र नवनर्वाचित अध्यक्ष श्री विश्वनाथ सुल्तानिया की अध्यक्षता में शुरु हुआ, इसका संचालन श्री रतन शाह ने किया इस अवसर पर सम्मेलन युवामंच महिला सम्मेलन सत्र भी रखा गया जिस पर मारवाड़ी युवा मंच के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री प्रमोद शाह** ने कहा कि हम समाज से पैसा लेते हैं, समाज के लोग जनसेवा का कार्य भी करते हैं एवं करना भी चाहिए, लेकिन जन सेवा के साथ-साथ समाज के लिए हम क्या करते हैं हमें यह भी सोचना होगा। हम समाज के उज्जवल पक्ष को रखने में अभी तक असफल रहे हैं, लोगों से मिलते हैं तो मालुम पड़ता है कि मारवाड़ी समाज की क्या क्या देन है। इन बातों को आँकड़ों के साथ उपलब्ध कराने का प्रयास करना चाहिए। आडम्बर की बात करते हुए आपने कहा कि आज समाज में स्थित यह है कि- **कोई नई बुराई न शुरु कर दे यह सुधार है। आजकल समाज में नई बुराई कैसे हो ऐसा लगता है, मानों बुराई पर शौधकार्य चल रहा है।**

द्वितीय सत्र के अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री प्रमोद शाह

श्री विजय कानोडिया ने कहा कि संस्कृति हमें पहचान देती है। समाज संस्कृति को आत्मसात करें, एवं इस पर कार्य करने की आवश्यकता भी है। यह हमारा सामाजिक दायित्व भी है। हमारी संस्कृति को हमें किसी भी रुप में हमारे बच्चों के बीच रखने की जरुरत है।

इस अवसर पर **श्री शम्भु चौधरी** ने समाज की संस्थाओं के इतिहास को संकलित-एकत्रित कर प्रकाशित करने पर बल दिया।

पुर्वांचल मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष **श्री विश्वनाथ सिंघानिया** ने एक कविता सुनाते हुए कहा कि :

सरे राह हम बैठे, लिए हाथ में चिनगारी,
जिनको जरुरत है वे आये, अपनी समा जला जाए।

हर व्यक्ति का समाज के प्रति कर्ज है जो सेवा के माध्यम से ही अदा हो सकता है।

श्री नन्द किशोर अग्रवाल : ने कहा कि समाज बदलता गया हमारी सोच बदलती गयी, आज हमारे समाज के बच्चे, हर क्षेत्र में आगे हैं। परन्तु हमारा समाज राजनीति में बहुत पीछे छुटता जा रहा है।

श्री अशोक काजड़िया, (दुर्गापुर) ने संगठन को और मजबूत बनाने पर बल दिया।

श्री गोपी घुवालिया : हम लोगों को व्यवस्था में सुधार लाना चाहिए, समय बदल चुका है नये लोग सामने लाने होंगे। नई विचार धाराओं को सामने लाना जरुरी है जिससे नई पीढ़ी को हम जोड़ने में सफल हो सकेंगे।

प० बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

श्री विश्वनाथ सुल्तानिया जी का परिचय

श्री विश्वनाथ सुल्तानिया जी का जन्म ७ अक्टूबर १९३८ में चिड़ावा, शेखावाटी (राजस्थान) में हुआ। बचपन से ही आप सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने लगे। चिड़ावा में पढ़ाई समाप्त करके आप कोलकाता आ गये, कोलकाता से आपने स्नातक की शिक्षा प्राप्त की। विद्यार्थी जीवन से ही समाज सुधार जैसे कार्यों में जुटे रहे। आजादी की लड़ाई के समय गुप्त सूचनाओ के आदान-प्रदान में आपने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विनोबाभावे के भूदान यज्ञ जैसे कार्यक्रमों से जुड़कर देश की सेवा करने का अवसर भी प्राप्त हुआ। हवड़ा लायन्स क्लब के अध्यक्ष पद पर रह कर कार्य कर चुके श्री सुल्तानिया जी का सम्मेलन के प्रति शुरु से ही विशेष लगाव रहा है। आप अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के साथ-साथ शहर कई संस्थाओं से जुड़े हुये है, जिसमें श्री रामस्नेही सत्संग समिति, चिड़ावा नागरिक परिषद, श्री बिहारीजी सेवा सदन (वृन्दावन) के ट्रस्टी, प्रमुख है।

श्री रामनिवास चोटिया : समाज को संगठित करना हमारा ध्येय है। इसे और अधिक मजबूती प्रदान करनी चाहिए। मै तन-मन-धन से समाज के साथ हूँ।

श्री रामगोपाल बागला : हम बाते तो बहुत करते हैं, काम कम, हमें सर्वप्रथम कथनी एवं करनी को एक करना होगा।

श्री आत्माराम तोदी : समाज को दिखावा आडम्बर मुक्त बनाने के लिए संगठन को मजबूत करना होगा।

श्रीमती विमला डोकानिया : सम्मेलन ही एक मात्र संस्था है जो संकट के समय समाज के साथ खड़ी रहती है। इसको मजबूत करना चाहिए।

श्रीमती पुष्पा भदानी : सम्मेलन में आने से मुझे काफी लाभ मिला। कई नई बात जानने का अवसर मिलता है।

इस अवसर पर सम्मेलन के राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री श्री अरुण गुप्ता, श्री रविन्द्र कुमार लड़िया, श्री सीताराम अग्रवाल, भागीरथ टिबड़ेवाल, श्रीमती ललीता सुल्तानिया, बिमला सुल्तानिया, श्रीमती इन्द्रा चौधरी ने भी भाग लिया। कार्यक्रम को सुचारु रुप से चलाने में श्री श्यामलाल डोकानिया, श्री रामनिवास चोटिया, श्री विश्वनाथ सिंघानिया, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री विश्वनाथ सराफ एवं श्री विश्वनाथ भुवालका ने सक्रिय भागीदारी निभाई।

जन-गण-मन के साथ सभा समाप्ती की घोषणा करते हुए श्री रतन शाह ने सभी का आभार व्यक्त किया।

श्री लोकनाथ डोकानिया का भाषण

पं. बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन अपने स्थापना के ६७ गौरववर्ष पूर्ण कर चूकी है। इस लम्बे ऐतिहासिक कार्यकाल का गौरवपूर्ण इतिहास भी है मारवाड़ी समाज को एक सूत्र में संगठित करना, समाज को अधिक से अधिक मजबूत बनाना, समाज में व्याप्त कुरीतियों के प्रति जनजागरण, समाज की महिलाओं को शक्तिशाली व संगठित करने में सहयोग प्रदान करना, अविवाहित लड़के-लड़कियों के योग्य वर-वधू चयन में उनके अभिभावकों को सहयोग प्रदान करना, जनसेवा के कार्य, गोष्ठी सह सेमिनारों का आयोजन, प्रतिभा व समाजरत्नों का सम्मान, शिक्षावृति, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के कार्यो का निष्पादन कराने में यथासंभव सहयोग प्रदान करना, महिला सम्मेलन व मारवाड़ी युवा मंच के साथ समन्वय बनाये रखने, समय-समय पे पत्रिका का प्रकाशन, राजस्थानी व हरियाणवी साहित्य, संस्कृति के प्रचार-प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करना, दीपावली व होली प्रीति मिलन का आयोजन करना जैसे महत्वपूर्ण कार्यों से परिपूर्ण इस संस्था का अध्यक्ष बनना किसी के लिए भी सौभाग्य की बात है। १७ दिसम्बर २००० को पुरुलिया अधिवेशन में मुझे अध्यक्ष पद का भार मिला, यह मेरा दूसरा कार्यकाल है, कुछ बाधाओं के साथ मेरे कार्यकाल को आप सभी साथियों के सहयोग से कुशलतापूर्ण पूरा करने के लिए मैं आप सभी का आभार व्यक्त करता हूँ। नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री विश्वनाथजी सुल्तानिया मेरे सहयोगी रहे हैं, आप एक कुशल सामाजिक कार्यकर्ता के साथ साथ मिलनसार भी है, मुझे आशा है कि संगठन को विस्तार करने में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहेगा। इस अवसर पर श्री नन्दकिशोर जी जालान को नहीं भूलना चाहता जो कि मेरे प्रेरणा स्रोत रहें हैं। सम्मेलन के वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा व राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पौद्दार का मुझे हमेशा सहयोग मिलता रहा है मैं इनके प्रति भी अपना आभार व्यक्त करता हूँ। श्री रतन साह, श्री विश्वनाथ भुवालका, श्री पूरणमल तुलस्यान के प्रति भी मैं आभार व्यक्त करता हूं। जाने-अनजाने में किसी को भी मेरे कार्यो से अथवा मेरे से कोई ठेस पहुंची हो तो मैं सभी से क्षमाप्रार्थी हूँ।

प० बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री विश्वनाथ सुल्तानिया द्वारा दिया गया अध्यक्षीय भाषण : .

मंच पर विराजमान सभी महानुभावों को प्रणाम करता हुआ अभिवादन करता हूं। अधिवेशन में पधारे हुए सभी बंधुओं एवं महिलाओं के प्रति आभार प्रकट करता हुआ स्वागत करता हूं।

संसार में सूरज चांद की रोशनी जहां नहीं जाती मारवाड़ी वहां भी मिल जायेंगे। रोजगार की टोह में जहां भी काम का जोगाड़ हुआ वहीं बस गये सबसे बड़ी खूबी मारवाड़ी मे यह रही है कि वह जहां भी बसा, वहां के वाशिन्दों में घुलमिलकर अपने छांटे से साधन से ही समाज सेवा एवं रीति रिवाजों में बढ़चढ़ कर भाग लेने लगे।

मारवाड़ी समाज में अनेक कर्मठ समाजसेवी हुए है, जिनका आज भी सम्मानपूर्वक हर प्रसंग में नाम आता है। विशेष रुप से जमुनालाल बजाज, पी.डी. हिम्मतसिंहका, सीताराम सेक्सरिया, भंवरमल सिंघी एवं राधाकिशन कानोडिया, जिन्होंने समाज सुधार एवं उत्थान में अपना जीवन लगा दिया।

हमारे समाज में १९४७ में आचार संहिता बनायी थी और उसका पालन भी मारवाड़ी समाज सख्ती से करते थे, लेकिन कालान्तर मे इसमे धीरे-धीरे विकृतियां पैदा हो गई और जो लक्ष्मण रेखा बनाई थी, वह मिट गयी। इसका नतीजा यह हुआ कि निचले तबके के समाज को भी देखा देखी कई तरह के कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। अभी भी वक्त है। आज भी समाज के कर्णधार अपने यहां सुधार की चेष्टा करेंगे तो निश्चय ही हमारे समाज को एक नई दिशा मिलेगी।

हमे ग्रास रुट से काम करना होगा और जरुरतमंदों की समस्याओं पर ध्यान देना होगा। आज मारवाड़ी हर क्षेत्र में विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से सेवामूलक कार्य बखूबी कर रहा है लेकिन किसी ने ठीक ही कहा है कि जलती हुई लकड़ियों को अलग-अलग करने पर धुआ फेंकती है और एक साथ होने पर प्रकाशमान हो उठती है। इसी प्रकार जाति बंधु भी एक साथ रहने से मजबूत संगठन बन जाता है। बिखर जाने पर उसकी ताकत कम हो जाती है और उसकी कहीं भी पहुंच नहीं होती। कई बार देखा गया है मारवाड़ी के नाम से हीन भावना आ जाती है जब कि पूरे भारतवर्ष में मारवाड़ी समाज जितना कार्य जनसाधारण के लिए दिलखोलकर करता है ऐसे बिरले ही मिलेंगे। हमारा दुर्भाग्य ही है कि मारवाड़ी भाषा के लिय निरन्तर संघर्ष हो रहा है लेकिन अभी तक मारवाड़ी भाषा को संविधान में जगह नही मिली है। नई जेनरेशन के बच्चों को आज देखा जा रहा है कि अपने ही घर में मारवाड़ी भाषा बोलना भूल गये है। जबकि अन्य समाज आज भी अपनी भाषा को महत्व देते हैं। अगर ऐसा ही वातावरण रहा तो आने वाली पीढ़ी में शहरों के अन्दर तो मारवाड़ी बोलने वाले कम हो जाएंगे। हमें इस पर ध्यान देना चाहिये और संकल्प लेना चाहिये कि अपने घर में बचपन से मारवाड़ी मे बात करेंगे।

सम्मेलन ने कई वर्षो से विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम के अन्तर्गत अनेक सम्बन्ध करवाएं। आज सम्बन्धों के लिए बहुत ही परेशानी हो रही है।

लोग ब्याह शादियों में इतना अनाप शनाप खर्चा करते है अगर उसका १० प्रतिशत भी बचा कर जरुरतमंदो में खर्च करें तो हमें बहुत ही आनन्द की अनुभूति होगी। समाज में राजनीति चेतना का नितांत अभाव है। इतने बड़े प्रान्त में जहां लगभग ७-८ लाख मारवाड़ियों की आबादी है वहां सिर्फ आज एक मात्र विधायक श्री दिनेश बजाज है।

हम किसी भी पार्टी के प्लेटफार्म पर आकर राजनीति चेतना को जगाना होगा। अन्य प्रान्तों में हमारा अच्छा खासा आधार है और ग्रास रुट तक जुड़े हुए हैं। हमें ऐसी व्यवस्था करनी है कि आई. टी. ट्रेनिंग का खर्चा सम्मेलन के माध्यम से हो और कोर्स पूरा होने पर उसके लिए रोजगार की व्यवस्था भी की जाए। इससे असमर्थ छात्रों को सम्बल मिलेगा। मैं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारियों का आभार प्रकट करता हूं तथा विशेष रुप से सर्वश्री सीताराम जी शर्मा, रतन जी शाह, राम अवतार जी पोद्दार तथा मेरे सहयोगीगण सर्वश्री लोकनाथ जी डोकानिया, श्यामलाल जी डोकानिया, रामनिवास जी चोटिया, विश्वनाथ जी भुवालका, विश्वनाथ जी सराफ, रामगोपाल जी बागला, शंभु जी चौधरी तथा अन्य कई महानुभावों का पूर्ण सहयोग रहा। इस अधिवेशन को सफल बनाने के लिए मैं उनका हार्दिक आभारी हूं।

जय भारत, जय मारवाड़ी समाज।

झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन

सत्र २००७-२००९ कार्यकारिणी समिति की सूची

भागचन्द पौद्दार *अध्यक्ष*

पोद्दार एण्ड सन्स
इस्ट मार्केट रोड, अपर बाजार, रांची (झारखण्ड)
फोन - २२०१७९३ (का), २२००४०२ (आ.)
मोबाईल : ९८३५५०२६३०

धर्मचन्द जैन रारा *महामंत्री*

सारस्वत मार्केट
बड़ालाल स्ट्रीट, अपर बाजार, रांची (झारखण्ड)
फोन - २३०६६४७ (का.), २२०३९९५ (णा.)
मोबाईल : ९४३११७०४७९

उपाध्यक्ष -
श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया - मुख्यालय
श्री केदारमल पलसानिया - जमशेदपुर
श्री जुगल किशोर मारु, राँची
श्री महावीर प्रसाद जैन - कोष

प्रमण्डलीय उपाध्यक्ष -
श्री विनय सरावगी, रांची प्रमण्डल
श्री रुडमल अग्रवाल, हजारीबाग प्रमण्डल
श्री प्रमोद कुमार तुलस्यान, पलामु प्रमण्डल
श्री किशोरी लाल मोदी, संथाल परगना
श्री वसन्त कुमार हेतमसरिया - हजारीबाग प्रमण्डल

संयुक्त मंत्री :
श्री पवन पोद्दार
श्री प्रदीप बाकलीवाल
श्री प्रह्लादराय मोदी
श्री प्रकाश शाह

प्रमण्डलीय मंत्री ;
श्री अरुण बुधिया, राँची प्रमण्डल
श्री वसन्त मित्तल, हजारीबाग प्रमण्डल
श्री गिरधारीलाल मुनका, सिंहभूम प्रमण्डल
श्री दीपक सिंघानिया, पलामु प्रमण्डल
श्री काशी प्रसाद चौधरी, देवघर प्रमण्डल

विभागीय मंत्री :
श्री प्रकाशचन्द बजाज, कार्यालय
श्री नन्दकिशोर पाटोदिया - जन-सुविधा
श्री वासुदेव अग्रवाल - राजनीतिक
श्री ललित पोद्दार, विवाह सहयोग
श्री प्रवीण नारसरिया - चिकित्सा
श्री कौशल राजगढ़िया - प्रचार-प्रसार
श्री विनोद कुमार जैन - सदस्यता
श्रीमती विजया जैन, सांस्कृतिक
श्री रवि शर्मा टोली - योजना
श्री मनोज बजाज - संगठन युवा
श्री राहुल मारु - कम्प्यूटर-पत्रिका
श्री नरेश बंका - जन सम्पर्क
श्री नरेन्द्र कुमार जैन - वित्त
श्री पवन मंत्री - संगठन
श्रीमती उषा जालान - महिला संगठन

कार्यकारिणी समिति
श्री कमल कुमार केडिया
श्री रतनलाल बंका
श्री ओमप्रकाश प्रणव
श्री विश्वनाथ नारसरिया
श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल
श्री राजकिशोर मोदी
श्री ओमप्रकाश अग्रवाल

प्रान्तीय समिति
श्री प्रदीप तुलस्यान
श्री ज्ञानप्रकाश जालान
श्री विजय अग्रवाल
श्री विद्याधर शर्मा
श्री रंजीत टिबड़ेवाल
श्री सज्जन कुमार सर्राफ
श्री वैद्य राजेश श्री कंठ
श्री चण्डी प्रसाद डालमिया

जिला अध्यक्ष
श्री वेदप्रकाश अग्रवाल - रांची
श्री चन्दूलाल भालोटिया - पूर्वी सिंहभूम
श्री प्रकाश चन्द पंसारी - पश्चिम सिंहभूम
श्री ओमप्रकाश गुप्ता - सरायकेला
श्री सुरेश कुमार जैन - पलामू
श्री सुनील अग्रवाल - लातेहार
श्री बुधराम अग्रवाल - गढ़वा
श्री मोहनलाल मंत्री - गुमला
श्री शंकरलाल अग्रवाल - सिमडेगा
श्री ओमप्रकाश अग्रवाल - हजारीबाग
श्री मनोहरलाल अग्रवाल - बोकारो
श्री पन्नालाल अग्रवाल - चतरा
श्री दिनेश खेतान - गिरिडीह
श्री हरगोबिन्द खेतान - कोडरमा
श्री प्रवीण गोयल - धनबाद
श्री मदनलाल बंका - लोहरदग्गा
श्री पुरूषोत्तमलाल गुटगुटिया - देवघर
श्री गौरीशंकर मेहरिया - दुमका
श्री जगदीश प्रसाद डोकानिया - पाकुड़
श्री रघुनाथ प्रसाद सोडानी - साहिबगंज
श्री नन्दलाल परशुरामका - गोड्डा
श्री देवी प्रसाद डालमिया - जामताड़ा

संरक्षक
श्री हनुमान प्रसादजी सरावगी - राँची
श्री नन्दलालजी रूंगटा - चाईबासा
श्री वासुदेव प्रसादजी बुधिया - राँची
श्री गोविन्द प्रसादजी डालमिया - देवघर

परामर्शदात्री समिति
श्री राधेश्यामजी अग्रवाल - जमशेदपुर
श्री अजय कुमार मारू
श्री मनोहर लाल टेकरीवाल
श्रीमती राजकुमारी हिम्मतसिंहका
श्री पुरूषोत्तम झुनझुनवाला - चाकोलिया
श्री ताराचन्द जैन - देवघर
श्री जमुनाप्रसाद शर्मा - रामगढ़
श्री धर्मचन्द बजाज
श्री मुरलीधर केडिया
श्री ललित जवानपुरिया
श्री त्रिलोक चन्द बाजला
श्री परमेश्वरलाल गुटगुटिया
श्री बनवारीलाल नेवटिया - मधुपुर
श्री अभय कुमार सर्राफ - देवघर

धरोहर - २

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी

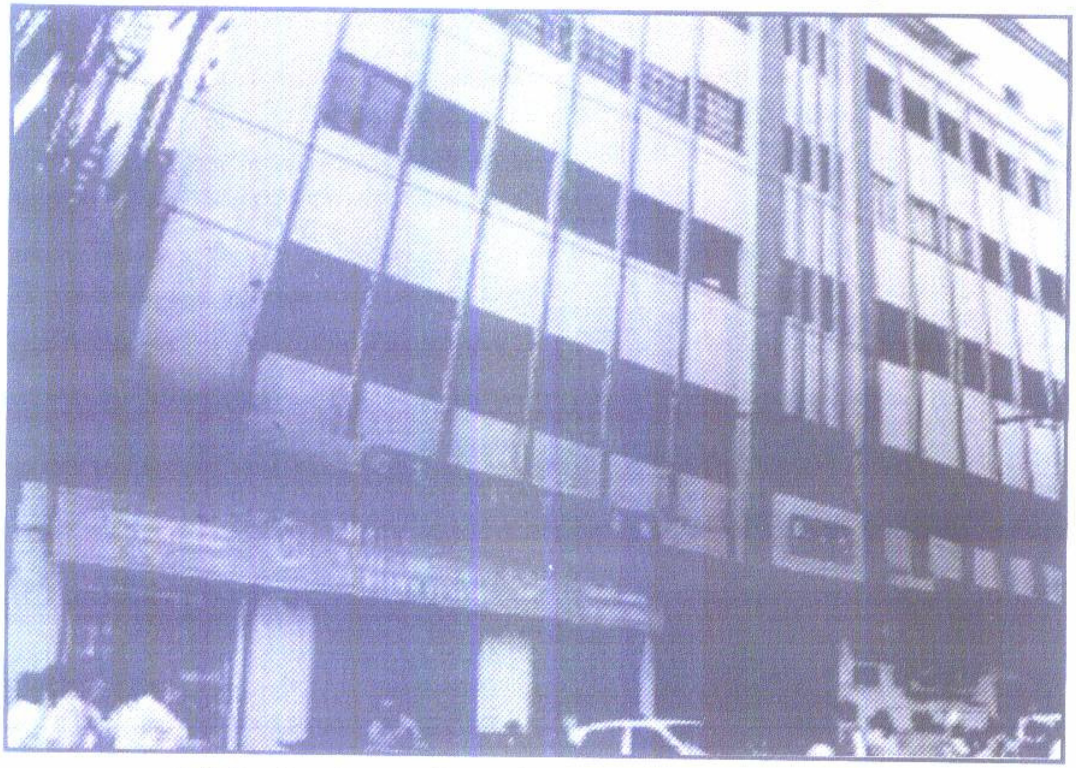

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, २२७, रविन्द्र सरणी, कोलकाता - ७०० ००७ स्थित पांच तल्ला भवन

संकलनकर्त्ता : आत्माराम तोदी

उन्नीसवीं सदी में उद्योग व्यापार में मारवाड़ियों का वर्चस्व बंगाल और खासकर कलकत्ता महानगर में कायम होने लगा। व्यापार उद्योग में अद्वितीय सफलता प्राप्त करने के साथ ही साथ उपार्जन और विसर्जन का अर्थात् परहित में धन का कुछ अंश लगाना अनिवार्य मानते थे एवं अपने जन्म स्थान में ही नहीं बल्कि अपने उद्योग व्यापार के क्षेत्र में भी अनेकों धर्मशालायें, स्कूल, कालेज एवं अस्पताल आदि का निर्माण किया। मारवाड़ी समाज ने सार्वजनिक उपयोग की अनेको संस्थायें कायम की उन्हीं एक कड़ियों में है **मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी** जिसका विकास क्रम विशाल वट वृक्ष की तरह उन्मुख होकर आज सेवा के विभिन्न आयामों की भूमिका में सन्निहित है। इसकी स्थापना के पूर्व व्यक्तिगत रुप में समाज सेवा के प्रति अभिरुचि रखने वाले महानुभावों ने जनसेवा का मार्ग ग्रहण किया था। क्योंकि हरकाल में कई महापुरुष अपने पूर्व जन्म के संस्कारों से प्रेरित होकर मानवता के रोग शोक और दुःख दारिद्र के निवारण में तन मन और धन से जुटे रहते हैं। कलकत्ते के बड़ाबाजार अंचल में एक ऐसी घटना घटी कि **मारवाड़ी सहायता समिति** (जो बाद मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी बनी) की स्थापना का अवसर उपस्थित हो गया। कलकत्ते के बड़ाबाजार जन स्कूल क्षेत्र में एक व्यक्ति मकान से गिर पड़ा और उसे सांघातिक चोट लगी। कुछ व्यक्ति उस घायल व्यक्ति को लेकर चिकित्सा हेतु कई अस्पतालों में भटकते

धरोहर - २

सोसाइटी का आउटडोर विभाग

रहे, पर उसकी समुचित चिकित्सा की व्यवस्था नहीं हो पायी। उसी क्षण मन में एक विचार आया कि इस अंचल में एक अस्पताल की व्यवस्था होनी चाहिये जिससे भविष्य में इस प्रकार आकस्मिक दुर्घटनाओं के शिकार व्यक्तियों को भटकना न पड़े। इस कार्य को साकाररुप देने के लिये २ मार्च १९१३ को काटन स्ट्रीट स्थित जोड़ा कोठी की एक बैठक में जुगल किशोर बिड़ला, ओंकारमल सराफ, हरखचन्द मोहता के प्रयास से मारवाड़ी सहायता समिति नामक संस्था की स्थापना की। इस संस्था के **प्रथम अध्यक्ष बने जुगल किशोर बिड़ला एवं प्रथम मंत्री बने ओंकारमल सराफ।** इस संस्था का उद्देश्य सहायता करना एवं जन साधारण की सेवा करना रखा गया।

पीड़ित मानवता की सेवा का व्रत लेते ही

महिला वार्ड

समिति का ध्यान असमर्थ रोग पीड़ितो की ओर गया। महानगर में अनेक दातव्य औषधालयों के रहते हुये मध्य श्रेणी के व्यक्तियों को अनेक कष्ट उठाने पड़ते थे, वे अस्पतालों में भर्ती होकर चिकित्सा नहीं करा पाते थे न ही डाक्टर बिना फीस लिये चिकित्सा के लिये उपलब्ध थे। ऐसे रोगी के चिकित्सा के लिये लक्ष्मीनारायण जी मारोदिया एव किशन दयाल जी जालान सतत् प्रयत्नशील थे। ६ जुलाई रथ यात्रा के दिन ४४/२, बांसतल्ला स्ट्रीट में औषधालय खोला गया। जहा डा० निर्मलचन्द और नारायण महाराज सेवा कार्य के लिये पहले से ही मौजूद

बेबी केयर यूनिट

थे। औषधालय खुलते ही डा० मृत्युंजय कुंडू चिकित्सक रुप में सम्मिलित किये गये प्रारम्भ में डा० कुन्डू ने अवैतनिक चिकित्सक के रुप में कार्य किया साथ ही डा० क्षेममोहन सेन को भी चिकित्सक के रुप में नियुक्त किया गया। समिति द्वारा स्थापित औषधालय की लोकप्रियता बढ़ने लगी, बांसतल्ला स्थित जगह बढ़ते हुवे रोगियों की संख्या देखते हुए कम पड़ने लगी, अतएव समिति का औषधालय ७/१ बेहरापट्टी में स्थानान्तरित किया गया। यह स्थान बांसतल्ला वाले स्थान से काफी बड़ा था। ४ जुलाई से ३१ अप्रेल के ९ महिनों में १७५५४ रोगियों को औषधी दी गई, इसी समय ९४९ रोगियों के घरों पर डाक्टरों ने इलाज किया। उस वक्त औषधालय में ५ डाक्टर थे दो वैतनिक एवं बाकी अवैतनिक। औषधालय में दो विभाग थे एलोपैथिक एवं होमियोपैथिक। लोगवाग एलोपैथिक औषधालय सेवन अधिक करते थे। आयुर्वेदिक विभाग खोला गया परन्तु अच्छे चिकित्सकों एवं धन के अभाव में शीघ्र ही उठा दिया गया। डाक्टर असमर्थ रोगियों के घर जाकर चिकित्सा करने के किसी से मांग कर फीस नहीं ली जाती थी।

मारवाड़ी सहायता समिति एक ओर औषधालय के माध्यम से रोग निवारण के पवित्र कार्य में संलग्न थी साथ ही

इंडोर ओ. टी.

धरोहर - २

सन १९४२ में सोसाइटी द्वारा बर्मा में किये गये राहत कार्य का अवलोकन करते हुए पं. जवाहरलाल नेहरु। साथ में है तुलसीराम सरावगी।

साथ सार्वजनिक सेवा के अन्य पक्षों की ओर भी इसका ध्यान था। विक्रम संवत १९६९ की भाद्र शुक्ल १५ को ग्रहण तथा चूड़ामणी योग था ऐसे दिन धर्मप्रेमी जनता गंगा स्नान करती है एवं महानगर के अलावा गांवों से आये हुए स्नानार्थियों की भीड़ ज्यादा रहती है। सार्वजनिक संस्थाओं की ओर से घाटों पर सेवा कार्य हो रहा था। मारवाड़ी सहायता समिति ने ५० स्वयं सेवकों के द्वारा घाटों पर सेवा कार्य किया, स्त्रियों एवं बालकों की रक्षा के लिये विशेष रुप से कार्य किया, खोए हुए बालकों को उनके घर पहुँचाया, स्त्रियां जो भटक गई, जिनका साछ छूट गया था उन्हें घर पहुँचाया। गांवों से आई बंगाली स्त्रियां जो बिछुड़ गई थी उन्हें उनके गांव पहुँचाया गया।

अंग्रेजों के शासन काल में मारवाड़ी सहायक समिति के अधिकांश कार्यकर्त्ता ब्रिटिश सरकार के कोपभाजन बन गए। वे या तो नजरबंद हो गये या उन्हें कलकत्ते से निष्कासित कर दिया गया। सरकार को अन्देशा था कि ये ब्रिटिश सरकार के हित के प्रतिकुल कार्य कर रहे है। यह समय सन् १९१६ का था। उस समय घनश्यामदास बिड़ला इस समिति के मंत्री थे। यद्यपि मारवाड़ी सहायक समिति जनकल्याणार्थ बनी थी, परन्तु कुछ नवयुवक राजनैतिक विचारों से प्रभावित थे और उसी समय हथियारों की एक खेप जो बाहर से

१. ७ अगस्त १९३८ सोसाइटी का ४ तल्ला भवन का उद्घाटन करते हुए नेताजी सुभाषचन्द्र बोस। २. सन् १९६४ में पूर्वी पाकिस्तान से आये शरणार्थी कैम्प का निरीक्षण करते हुए तत्कालीन राष्ट्रपति सर्वपल्ली डा० राधाकृष्णन व मुख्यमंत्री श्री प्रफुल्ल चन्द्र सेन।

आई थी वो कहीं गुम हो गई, को लेकर तत्कालीन अंग्रेजी सरकार की नजर इस मारवाड़ी सहायक समिति के कुछ कार्यकर्त्ताओं पर पड़ी।

उन दिनों समिति में खूब उथल-पूथल चली, इसका **हिन्दू क्लब** टूट गया, **साहित्य संवर्द्धिनी** सभा बन्द हो गई दातव्य औषधालय भी खतरे में पड़ गया। नवयुवकों द्वारा स्थापित यह संस्था टूटने को हो गई। तब मारवाड़ी समाज के गणमाण्य वयस्कों ने इस कार्य को अपने हाथ में ले लिया एवं चिन्तन करने लगे ऐसा कौन सा उपाय किया जाये जिससे संस्था को सरकार का कोप भाजन न बनना पड़े। ऐसी अवस्था में नजर आये कैलाश चन्द्र बोस। श्री बोस कलकत्ते के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से थे, सरकारी अफसरों से उनकी घनिष्ठता थी, सोचा गया कि बोस का सहयोग पाने से सरकार समझ जायेगी कि यह राजनैतिक संस्था नहीं है। समिति के हितचिन्तकों ने कह सुनकर उन्हें समिति का अध्यक्ष बनाया। अध्यक्ष बनते ही श्री बोस ने इसका नाम मारवाड़ी

बंगलादेश युद्ध के समय आये हुए शरणार्थीयों के बीच सोसाइटी द्वारा जो सेवा कार्य हुआ है, वह पिछले सभी रिकार्डों को भंग कर दिया। स्वयं तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के कार्यों का निरीक्षण करती हुई। इस कार्य के लिए केन्द्र सरकार द्वारा ३ करोड़ की राहत सामग्री वितरीत करने का भार सोसाइटी को दिया गया।

सहायक समिति से बदल कर मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी कर दिया। एवं यही नाम स्थायी हो गया, मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी नामकरण के पश्चात् इसने उद्देश्यों को स्पष्ट किया जो इस प्रकार थे :-

१. सर्वसाधारण को शारिरिक एवं मानसिक उन्नति के लिये सहायता पहुंचाना।

२. मेले आदि के अवसर पर यात्रियों, भूले भटके, अनाथ, स्त्री, बच्चों की सेवा एवं रक्षा।

३. शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार।

४. स्वास्थ रक्षा हेतु आरोग्य भवन, दातव्य औषधालय की स्थापना।

५. बाढ दुर्भिक्ष महामारी, दैवी विपत्तियों से पीड़ित जनता की सेवा एवं रक्षा करना।

६. विशुद्ध आयुर्वेदिक औषधियों को शास्त्रोक्त पद्धति से तैयार कर सुलभ मूल्य में विक्रय करना।

धरोहर - २

समय से पूर्व जन्म लेने वाले बच्चों की देखभाल करती हुई सोसाइटी की नर्स।

इन उद्देश्यों के स्पष्टीकरण के पश्चात सोसाइटी का भविष्य एवं अस्तित्व सुरक्षित हो गया सरकार में फैली भ्रान्तियां दूर हो गई एवं ब्रिटिश सरकार ने यथा साध्य सहयोग देना प्रारम्भ कर दिया।

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के प्रथम चरणों में सेवा कार्यों की रुप रेखा

सन् १९१३ से लेकर १९२३ के वर्षों में वर्दवान, त्रिपूरा, बिहार, पूर्वी बंगाल, उड़ीसा, छपरा, उत्तर बंगाल में बाढ़ सेवा पर लाखों रुपये खर्च किये एवं प्रथम दशक में ही सोसाइटी ने सेवा कार्यों से जनता एवं अधिकारियों के हृदय में एक गौरवपूर्ण एवं सम्मानजनक स्थान बना लिया। प्रत्येक वर्ष मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी ने सदा विपन्न, अभावग्रस्त, पीड़ित ग्रस्त लोगों को राहत पहुंचाने के लिये सेवा कार्य करती रही। सन् १९२३ से १९३२ की अवधी में उत्तर प्रदेश के कुछ अंचलों में अनेक बार सेवा कार्य किया।

सन् १९२५ई. मे उड़ीसा में एवं फिर १९२७ में उड़ीसा में बाढ़ का भीषण प्रकोप हुआ सोसाइटी के कार्यकर्त्ताओं ने बाढ पीड़ितों की सहायता के लिए कैम्प खोले। १९२६ में बंगाल के मेदिनीपुर जिले में बाढ़ आई। यहां सेवा कार्य में सोसाइटी ने ६०००/- रु. व्यय किये। उड़ीसा बाढ सहायता कार्य के लिए चन्दा उठाने में श्री दुर्गा प्रसाद खेतान, श्री भागीरथ कानोड़िया, श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका ने सहयोग प्रदान किया।

एक ओर देश की जनता जहां बाढ से त्रस्त थी वहीं देश के कुछ भागों मे अकाल का प्रकोप था जिसके अन्तर्गत बंगाल, राजस्थान, बिहार, उड़ीसा, एव पंजाब के अंचलों में अकाल पड़ा। सोसाइटी के सेवाव्रती कार्यकर्त्ता अपनी पूरी निष्ठा से सेवा कार्य में लगे रहे।

साम्प्रदायिक दंगों में राहत कार्य

अंग्रेजों के शासनकाल की सबसे बड़ी विभीषिका थी साम्प्रदायिक दंगा। विदेशी सरकार देश के हित में नहीं अपने मुल्क के हित में देश पर अधिकार जमाये बैठी थी और फूट डालो शासन करो यही उसकी नीति थी। इसके तहत हिन्दू-मुसलमानो में एक-दूसरे के प्रति विद्वेष पैदा करना, हरिजनों एवं सवर्णों में मतभेद पैदा करना, अल्पसख्यकों के मन में सन्देह पैदा करना आदि अंग्रेजों के मुख्य कार्य थे। अंग्रेजों की नीति थी कि इस देश के नागरिक जो सदा एकता के सूत्र में आवद्ध रहे, वे मिल-जुल कर न रह सके और अंग्रेजी राज कायम रहे। अंग्रेजों के शासनकाल में साम्प्रदायिकता की अग्नि प्रज्ज्वलित हो रही थी और इसका भयानक रुप सन् १९२४ में तत्कालिक पश्चिमोत्तर प्रदेश (अब पाकिस्तान) के कोहाट में हुआ। कोहाट में मुस्लिम बहुल अंचल है और वहां हिन्दू अल्पसंख्यक थे। धार्मिक उन्माद और अंग्रेजों के बहकावे में आकर वहां के मुसलमानों ने अल्पसंख्यक हिन्दुओं का कत्लेआम शुरु कर दिया। इस भयानक दंगे से सभी विचारवान व्यक्ति घबड़ा उठे, सारे देश में चिन्ता की लहर दौड़ गई। देश के गणमान्य नेता पंजाब केशरी लाला लाजपत राय ने दंगापीड़ितों के सहायता के लिए सारे देशवासियो के सम्मुख अपील की। पीड़ित मानवता की सहायता के लिए यह अपिल मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के कार्यकर्त्ताओं ने सूनी और सोसाइटी के कर्मठ कार्यकर्त्ता दंगा पीड़ितों की सेवा के लिए कोहाट

धरोहर - २

पहुंच गये। एक ओर जहां देश की आजादी के लिए कांग्रेस के नेतृत्व में आन्दोलन चल रहा था वहीं दूसरी ओर अंग्रेजी सरकार आंदोलन को दबाने के लिए साम्प्रदायिकता की ज्वाला भड़का रही थी। सन् १९३१ में उत्तर प्रदेश के कानपुर नगर में साम्प्रदायिक दंगा फैल गया और इस ज्वाला को शान्त करने में गणेश शंकर विद्यार्थी शहीद हो गये। काफी लोग हताहत एवं मारे गये। ऐसे समय सोसाइटी ने अपने कार्यकर्त्ताओं को सेवा कार्य के लिए कानपुर भेजकर बड़े ही साहस का काम किया।

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी अभी तक सरकारी एक्ट के अन्तर्गत रजिस्टर्ड नहीं थी इसको स्थायित्व देने एवं नियमबद्ध करने के लिए इसका रजिस्ट्रेशन आवश्यक था। सन् १९२६ को इंडियन सोसाइटी एक्ट (१९१३) के अन्तर्गत इसका रजिस्ट्रेशन करा लिया गया। इसके अनुसार पदाधिकारियों का चुनाव, वार्षिक विवरण प्रकाशित करना, वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न करना एवं कार्यों को लिपिबद्ध करना आवश्यक हो गया एवं यहीं से सोसाइटी के इतिहास की लिपिबद्ध श्रृंखला प्रारम्भ होती है।

रसायनशाला का उद्घाटन

५ जुलाई सन् १९२२ को महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी के करकमलों द्वारा लिलुआ के बिड़ला उद्यान में रसायनशाला का उद्घाटन हुआ जहां आयुर्वेदिक औषधियों का निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया।

शुद्ध खाद्य प्रचार विभाग

साधारण जनता को शुद्ध घी से बनी हुई पुड़ी, मिठाई, नमकीन को उपलब्ध कराने के उद्देश्य बेहरापट्टी में एक दुकान खोली गयी, जिसका उद्घाटन नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस समय सुभाष चन्द्र बोस ने सोसाइटी के सेवा कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा सोसाइटी देशबन्धु सी. एफ. एंड्रूज के सपनों को साकार करने में लगी है।

स्थायी सेवा कार्यों का विस्तार

सोसाइटी एक ओर जहां देश के हर भाग में बाढ़, अकाल, महामारी, साम्प्रदायिक दंगे आदि से पीड़ितों की सेवा में लगी थी, वहीं दूसरी ओर स्थायी सेवाओं में भी विस्तार किया। दो दशक पूरा होते ही जहां एक छोटा चिकित्सालय था वहां अब व्यवस्थित विभाग खुल गये : एलोपैथिक विभाग, आयुर्वैदिक विभाग, सर्जिकल विभाग, महिला विभाग, होमियोपैथिक विभाग, आयुर्वैदिक रसायनशाला विभाग, नाक कान और नेत्र विभाग, शिक्षा विभाग, प्राकृतिक एवं दैवी संकटों में सहायता विभाग। शिक्षा विभाग में लगभग ८०० छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे थे।

सोसाइटी का नया भवन

सोसाइटी की बढ़ती हुई प्रवृत्तियों के कारण स्थानाभाव की कमी महसूस हो रही थी। देशबन्धु सी. एफ. एन्ड्रूज के शब्दों में सोसाइटी के पास और भी स्थान हो जायें तो कलकत्ते में चल रही अन्तर्मुखी प्रवृत्तियों का और अधिक विस्तार हो सकता है। लेकिन सोसाइटी के सामने स्थानाभाव की समस्या बड़ी थी। कार्यकर्त्ता भवन निर्माण के लिए अपनी पूर्ण शक्ति के साथ धनसंग्रह कार्य में जुट गये। सोसाइटी का निजी भवन होने से इसकी व्यापकता एवं उपयोगिता और बढ़ जाती। बिड़ला बन्धुओं ने, श्री शुभकरण रामप्रसाद जाजोदिया एवं हरिबक्स जी सांलका ने भवन निर्माणार्थ अनुदान दिया। सोसाइटी के कार्यकर्ता एवं मंत्री श्री ज्वाला प्रसाद कानोड़िया इस कार्य में सतत् प्रयत्नशील थे, कोशिशें हो रही थी, चन्दा इकट्ठा किया जा रहा था। सोसाइटी के कार्यकर्त्ताओं ने अच्छा उत्साह दिखाया। सन् १९३५ तक साढ़े नौ कट्ठा जमीन अपर चितपुर रोड (अब रविन्द्र सारणी) पर करिबन ५३२००/- में खरीद ली गयी। लेकिन कलकत्ता कारपोरेशन के नियमानुसार भूमि का कुछ भाग छोड़ना पड़ा। भूमि क्रय के बाद भवन निर्माण के लिए करीबन ८० हजार रुपयों की आवश्यकता थी। इस निमित्त १९३५ तक ३५ हजार रुपये इकट्ठे किये जा चुके थे। तत्कालीन सोसाइटी के मंत्री ज्वाला प्रसाद जी कानोड़िया ने इस दिशा में काफी लगन एवं तत्परता का परिचय दिया। शुभ तिथि में अपर चितपुर रोड में नये भवन का निर्माण कार्य प्रारम्भ किया गया। जिन सहयोगियों ने इस निर्माण कार्य में अपना विनम्र योगदान दिया उनमें डालमिया एण्ड कम्पनी के प्रतिष्ठान के श्री अर्जुनलाल डालमिया का विशेष सहयोग रहा। इस भवन के निर्माण में तीन वर्ष

संस्था के पदाधिकारीगण

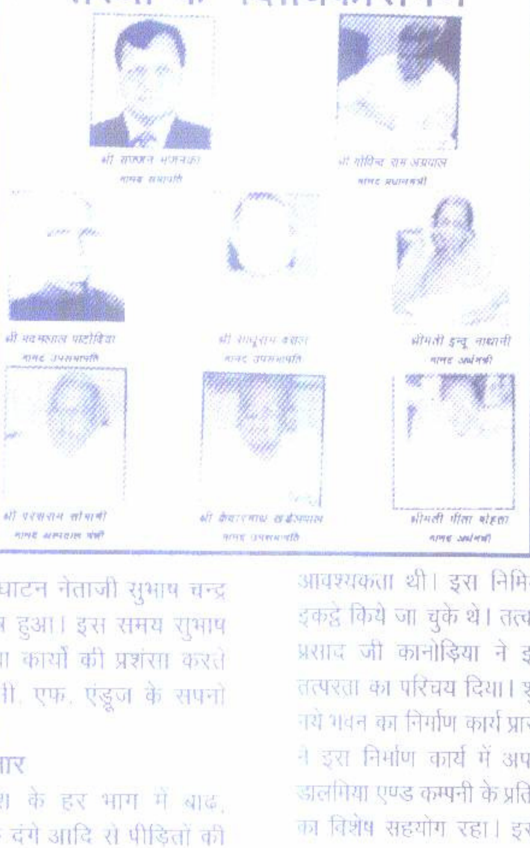

धरोहर - २

का समय लगा एवं कुल १,३१,४५७ रुपये ७ आने ८ पाई व्यय हु। सन् १९३८ में सोसांइटी का अपना भवन अपर चितपुर रोड (अब २२७, रविन्द्र सरणी) में बनकर तैयार हो गया। ७ मई १९३८ को नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के कर कमलो द्वारा इस नये भवन का उदघाटन समारोह सम्पन्न हुआ। नये भवन बन जाने के पश्चात तीन नये विभाग खोले गये। १. नाक, कान गला विभाग, २. शल्य चिकित्सा विभाग ३. दन्त चिकित्सा विभाग। १९३८ में शल्य चिकित्सा विभाग का उद्धाटन रामसहाय मल मोर एवं दन्त चिकित्सा विभाग का उदघाटन श्री गोविन्द रामजी बांगड़ द्वारा सम्पन्न हुआ।

सोसाइटी का अमर कार्यकर्त्ता

उस समय श्रीनारायण जी महाराज पीड़ित मानवता की सेवा, दैनंदिन समर्पण का उदात्तभाव लेकर सेवा कार्य कर रहे थे, उसे देखते हुए बड़ाबाजार के कार्यकर्त्ता के वे पितामह कहे जायेंगे। पिलानी नगर के लक्ष्मीनारायण जी मुरोदिया और जुगलकिशोर जी बिड़ला ने सेवा समिति तो नहीं, पर उससे मिलाजुला एक अत्यावश्यक कार्य प्रारम्भ कर दिया था। सहयोगी के रुप में अपनी सेवायें नारायणजी महाराज ने समर्पित कर दी थी। बहुत से जन कलकत्ता में अनाथों की शकल मे जीते थे और मर जाते थे असहाय अवस्था मे। अंतिम क्षण में चिकित्सा भी कोई करे, यह उपाय सामने न आ रहा था। ऐसे क्षणो में लक्ष्मीनारायण जी मुरोदिया ने नया अश्रुत प्रारम्भ किया, इस बात की प्रतीक्षा न की कि नगर शासन इस विषय मे क्या कर सकता है। जो अनाथ व्यक्ति फुटपाथ पर पड़े हुए बीमार कराहते हुए या अन्तिम क्षण की प्रतीक्षा में पड़े मिलते, वे उनकी टोह लेते, खोज खबर लेते। महाराजजी उन्हें उस स्थान से उठा लाते, उनकी चिकित्सा और सेवासुश्रुषा करते। इस काम में सहयोगी थे जुगलकिशोर जी बिड़ला। जब ६ जुलाई १९१३ को सोसाइटी के औषधालय की स्थापना ४४/२ बांसतल्ला स्ट्रीट में की गयी, उसके लिए डा० निर्मलचन्द्र और सच्चे कर्मवीर नारायण महाराज पहले से नियुक्त थे। समिति को श्रीयुक्त पं० नारायण महाराज का बड़ा ही गौरव है। ये महाशय बड़े ही हृदय और लोकसेवक थे, लोगों की दुखजनक अवस्था देखते ही हृदय पिघल जाता था। और ये खाने पीने की अपनी सुधि त्याग कर उसकी सेवा में लग जाते है। आपकी लोकसेवा पर मुग्ध होकर बंगाल के गवर्नर लार्ड कारमाइकेल महोदय ने दो वर्ष पूर्व (अर्थात् सन् १९११ में) आपको एक सार्टिफिकेट प्रदान किया था।

सोसाइटी का स्वर्ण जयन्ती अंक

प्रथम वर्षों की वार्षिक रिपोर्ट से पृ ५० से

अस्पताल निरक्षण

मारवाड़ी समाज का गढ माने जाने वाला कोलकाता शहर के बड़ाबाजार अंचल में मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी भवन के निरक्षण में श्रीमती इन्दू नाथानी व श्रीमती गीता मोहता का सहयोग प्राप्त हुआ। यहां जनरल वार्ड, किचन विभाग पांचवे तल्ले पर स्थित है। यहां जनरल वार्ड के साथ स्पेशल केबिन, आर्थोपेडिक वार्ड, बर्न यूनिट, आईसीसीयू, आईटीयू, चाइल्ड केयर यूनिट

आपरेशन थियेटर में आपरेशन करते हुए डाक्टरगण

भी उपलब्ध है। नौ माह पूर्व जन्म लेने वाले बच्चे के लिए पूर्णतः गहन केयर यूनिट है जिसकी देखरेख सिस्टर सम्पा चन्द्रा के जिम्मे है। डा० रणधीर लोधा, डा० दृष्टि कोठारी, डा० पूर्णित गोयनका व डा० अर्पण अग्रवाल की देखरेख में यह केयर यूनिट आसपास के अस्पतालो का रेफरल सेन्टर बन चुका है। १७ बेड़ों का यह यूनिट ओवहरहेड रेडियट कार्नर से लैस है। इस यूनिट की पूर्ण रुप से ठीक होने की रेट ९९ प्रतिशत है। इस सेवा ने अस्पताल की प्रतिष्ठा में चार चांद लगा दिया है। श्रीमती गीता मोहता जो इस अस्पताल से ३० सालों से जुड़ी हैं, आप यहाँ का बाल विकास केन्द्र (विकलांग बच्चों के लिए) का देखभाल करती हैं। बाल विकास केन्द्र मोनालीसा चटर्जी (स्पेशलिस्ट) के पूर्ण सहयोग से संचालित किया जा रहा है। इस केन्द्र की समाचार पत्रों में कई बार भूरि-भूरि प्रशंसा भी की जा चुकी है। यह केन्द्र न सिर्फ अपने आप में अनूठा व इस क्षेत्र के चिकित्सा क्षेत्र में एकलौता भी है। सन् १९९२ से जुड़ी श्रीमती सुधा जैन संस्था के प्रकाशित पत्रिका रिलीफ की उपसम्पादिका के साथ साथ किचन विभाग का भी कार्य देखती हैं। बताती हैं कि अगले माह की संस्था की तरफ से निःसंतान माता के गर्भधारण समस्या को लेकर एक कैम्प लगाया जायेगा। २३ सितम्बर को उसकी जांच व इलाज सम्बन्धी कार्य किये जायेंगे। यह कार्य निःसंदेह संस्था की सोच को जीवंत रखता है। संस्था से जुड़ी

धरोहर - २

तीन महिला श्रीमती इन्दू नाथानी जो कि संस्था का वित्त व रोजाना देखरेख का कार्य संभालती है व श्रीमती गीता देवी मोहता व सुधा जैन के कार्यों को जितना भी सराहा जाए उतना ही कम है। संस्था के मुख्य स्तम्भ में श्री सीताराम केडिया को भुला पाना संभव नही है। आप संस्था के एक प्रकार से भीष्म पितामह ही माने जा सकते है। श्री नथमल जी केडिया, श्री अगिचन्द बोरार, श्री अरुण कुमार धेलिया, श्री अशोक कुमार मोदी, श्री अशोक कुमार पोद्दार, श्री अनील कुमार पाटोदिया, श्री बासुदेव बेरीवाल, श्री चिरंजीलाल केजड़ीवाल, श्री चिरंजीलाल अग्रवाल, श्री गोपिराम बड़ोपोलिया, श्री गौरीशंकर कायां, श्री जयदेव प्रसाद राडालवारिया, श्री जुगल किशोर जैथलिया, श्री जुगल किशोर काजड़िया, श्री केदारनाथ खण्डेलवाल, श्री किशनलाल पुगलिया, श्री मनोज कुमार गुप्ता, श्री नारायण प्रसाद माधोगढ़िया, श्री नथमल परसरामका, श्री नन्दलाल टाटिया, श्री ओम लडिया, श्री पारसमल सोमानी, श्री प्रह्लादराय अग्रवाल, श्री रमेश मेहरा, श्री रोशनलाल धोणा, श्री शंकरलाल गर्ग, श्री श्याम सुन्दर शाह, श्री सीताराम अग्रवाल, श्री शिवप्रकाश अग्रवाल, श्री विद्यासागर मंत्री, श्री विजय उपाध्याय, श्री विश्वनाथ कहनानी आदि जैसे कर्मठ सामाजिक कार्यकर्त्ताओं का व समाजसेवियों का सहयोग इस संस्था को प्रायः मिलता रहता है। संस्था के इतिहास का यह संक्षिप्त भाग है। संस्था के डाक्टर, नर्सिंग स्टाप, एकाउन्ट्स स्टाफ के अलावा संस्था के समस्त कर्मचारियों में सेवा की भावना झलकती है। समर्पित भाव से कार्य करने की झलक देखी जा सकती है इस सोसाइटी में। श्री प्रदीप कुमार शर्मा वर्तमान मे कार्यवाहक प्रधान व्यवस्थापक के रुप में कार्यरत हैं।

सोसाइटी की कथा का एक लम्बा इतिहास है। देश के कोने-कोने में पहुंचकर अकाल दुर्भिक्ष, सुखा एवं बाढ़, भूकंप, दंगों आदि संकटग्रस्ट समय में या फिर राष्ट्रीय आपदा विपदा, युद्ध के अवसर पर मानवता की सेवा की। देश की आजादी में भी इस संस्था की महत्वपूर्ण भूमिका को कभी नकारा नहीं जा सकता। स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास इस संस्था के इतिहास से जुड़ा हुआ है। सोसाइटी की सेवाओं के साक्षी रहे, महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरु, डा० राजेन्द्र प्रसाद, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, महामना मदनमोहन मालवीय, मदर टेरेसा, मारवाड़ी समाज का कोई ऐसा कोलकाता का कार्यकर्त्ता नही रहा जो इस संस्था से नहीं जुड़ा हो। स्व० जुगल किशोर बिडला, स्व० लक्ष्मीनारायण मुरोदिया, औंकारमल सराफ, स्व० प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, स्व० सीताराम सकसेरिया, स्व० हनुमान प्रसाद पोद्दार, फूलचन्द चौधरी, स्व० बृजमोहन बिड़ला, स्व० भागीरथ कानोडिया, स्व० आनन्दीलाल पोद्दार, मोहनलाल जालान, तुलसीराम सरावगी, राधाकृष्ण कानोड़िया, स्व० घनश्याम दास बिड़ला, बजरंग लाठ, धर्मचन्द सरावगी, रामेश्वर टांटिया, रामेश्वर प्रसाद पाटोदिया, गोवर्द्धन दास बिन्नानी जैसे कई महान समाज रत्नों की सेवा का इतिहास भी इस संस्था से जुड़ा है।

अपने गौरवशाली जीवन के शत्‌वर्षों में प्रवेश के इस अखण्ड सूर्य मे जो कीर्तिमान स्थापित किये हैं इसे चन्द शब्दों मे समेटना न सिर्फ नामुमकिन व असभव भी है। महिमामंडित संस्था को शब्दों में समेटना भी असम्भव सा है। मानव सेवा के रोज नये इतिहास बनाती जा रही इस संस्था के समस्त पदाधिकारियों व कार्यकर्त्ताओं को समाज विकास की तरफ से शुभकामना।

जहां अस्पताल ने चिकित्सा के क्षेत्र में कई नये प्रयोग किये हैं वही मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी आज भी समाज की गौरवशाली धरोहर में अपना पहला स्थान प्राप्त करने मे किसी भी रुप में पीछे नहीं है। सम्पर्क : मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी - २२५-२२७ रविन्द्र सरणी, कोलकाता - ७०० ००७

- शम्भु चौधरी

सज्जन भजनका, मानद सभापति

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की स्थापना १९१३ में समाज के कमजोर व प्रवासी मारवाड़ी समाज के लोगों को ध्यान में रख कर की गयी थी। इसका उद्देश्य बहुआयामी था, चिकित्सा के साथ ही प्राकृतिक आपदाओं में सहायता पहुंचाना, सुलभ चिकित्सा की व्यवस्था करना, के साथ ही शुद्ध आहार की व्यवस्था, स्वास्थ्य समर्पण की अन्य योजनायें जैसे आरोग्य भवन की स्थापना, राष्ट्रीय महत्व की सभाओं में; आपदा-विपदाओं में भोजन पानी की सुव्यवस्थित व्यवस्था का भार ग्रहण करना, रिलीफ कैम्प के माध्यम से संकटग्रस्त लोगों को राहत पहुंचाना जैसे कार्य से यह संस्था सारे देशभर में पहचानी जाती है। परन्तु धीरे धीरे आवश्यकतानुसार इसमें भी परिवर्तन आता गया, जिसमें कार्यकर्त्ताओं का अभाव स्पष्ट रुप से झलकता है। वर्तमान में हमारा कार्य कोलकाता स्थित हास्पीटल व रानीगंज तक ही सिमट कर रह गया है। रानीगंज की अपनी अलग एक समिति है, जो इसका संचालन करती है एवं केवल इसका लेखा-जोखा कोलकाता के अस्पताल के साथ दिखाया जाता है। कोलकाता की तरह ही रानीगंज के स्थानीय

धरोहर - २

समाज बन्धु रानीगंज में अस्पताल का सफल संचालन कर रहे हैं। देश के जाने माने उद्योगपति व कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए, स्वभाव से मृदुभाषी, नम्र व सहज उपलब्ध श्री भजनका जी अस्पताल के विकास को लेकर हर पल सोचते रहते हैं, कलकत्ता आगमन के पश्चात ही आप इस संस्था से जुड़ गए, बाद में आपको उपाध्यक्ष एवं वर्तमान में आप सभापति पद पर कार्यरत है। श्री भजनका जी बताते है कि सोसाइटी न सिर्फ २५/- रुपये पर प्रतिदिन रहना, खाना, इलाज व नर्सिंग की सुविधा प्रदान करता है अगर कोई व्यक्ति नहीं दे पाता है तो कई समाजसेवियों के सहोग से यह सुविधा मुफ्त भी उपलब्ध करा दी जाती है, जबकि यही सुविधा अन्य अस्पतालों में आज २००/- रुपये से कम में उपलब्ध नही है। असमर्थ लोगों की सेवा के साथ साथ कुछ समर्थ लोगों के लए आधुनिक व भौतिक सुख सुविधा व जनरल वार्ड को सुसज्जित करना भी शामिल है। आप मानते हैं कि अन्य संस्थाओं की तरह यहाँ भी मजदूर संगठनों की समस्या रहती है। जिससे संभावित सुधार की प्रक्रिया में रुकावट की स्थित बन जाती है। फिर भी हमारे यहां के कर्मचारी बहुत ही सहयोग व सेवा भावना से कार्य करते है। संस्था के उद्देश्य ने उनके मानस को भी प्रभावित किया है। सोसाइटी के पास बगल में एक खाली जगह है जिसमें भवन बनाने की प्रक्रिया जारी है। नये सदस्य भी बनाये जा रहे है। परन्तु आप मानते है कि समाज में जो सेवा की भावना पहले देखने को मिलती थी वह आज के युवकों में कम होती जा रही है। समर्पित कार्यकर्त्ताओं की कमी खलती है। कुछ मिलते भी है तो उनके पास समय का अभाव। समय का कोई कमीटमेंट नहीं है। परन्तु जो दे रहे है वे पूर्णतम समर्पित भी हैं। सोसाइटी में बहुत कम मूल्य में सेवा देने के कारण घाटा रहना स्वाभाविक तो है परन्तु इस घाटे को पूरा करने के लिए दानदाताओं का अभाव अभी तक तो नही खटकता। मारवाड़ी समाज की एक विशेषता है कि समाज सेवा, जनसेवा एवं परोपकार के प्रति इनका रुझान रहा है जिसमें इन दिनों थोड़ी कमी दृष्टिगत हो रही है। हमारे पूर्वज सादा-जीवन उच्च विचार का जीवन यापन करते थे। आज के इस भौतिकवाद युग में सादा जीवन हम न भी रख पायें तो भी उच्च विचार से समझौता न करें। श्री भजनका जी आगे बताते है कि श्री गोविन्द राम अग्रवाल, श्री केदारनाथ जी खण्डेलवाल, श्री परसुराम सोमानी, श्रीमती इन्दू नाथानी, श्रीमती गीता मोहता व सुधा जैन जैसे कर्मठ व निष्ठावान कार्यकर्त्ता के बल पर ही अस्पताल का कार्य, संचालन सुचारु रुप से बना हुआ है। मेरा भी यह प्रयास रहता है कि महीने में कम से कम एक-दो बार अस्पताल में जाकर समय दूँ।

श्री गोविन्द राम अग्रवाल (मानद प्रधानमंत्री)

श्री गोविन्द राम जी अग्रवाल समाज के जाने पहचाने व सुलझे हुए विचारों के सुपरिचित सामाजिक कार्यकर्त्ता है। सोसाइटी में पिछले कई वर्षों से अपनी निःस्वार्थ सेवा प्रदान कर रहे हैं। आप शहर की अन्य कई संस्थाओ से भी जुड़े हुए है, जिसमें साल्टलेक स्थित हरियाणा विद्या मन्दिर प्रमुख है। आप बताते है कि आज की इस व्यवस्था में भी सोसाइटी २५/- रुपये प्रतिदिन में इलाज कर रही है जिसमें दो समय का खाना, नर्सिंग सेवा, डाक्टरों की सेवा व बेड का चार्ज शामिल है। इस अस्पताल में २४ घंटा दवा की दुकान, एम्बुलेंस व आक्सीजन की सेवा भी उपलब्ध है। जन्म से पहले बच्चों का जन्म के इलाज की जो सुविधा व नर्सिंग इतने कम शुल्क में कोलकाता व आसपास के अंचल में कहीं उपलब्ध नहीं है। पूर्णतः वातानूकुलित नये साज-सज्जा, चार डाक्टरों की टीम इस सेवा में लगी रहती है। इसमें बच्चों की ठीक होने की रेट ९९ प्रतिशत है। १७ बेड़ों की एक मात्र यूनिट पूर्णतः रेडियेंट कार्नर से लैस है। आप बताते हैं कि हमारे यहां सबसे कम खर्च व समाज के कमजोर वर्गों को ध्यान में रख कर यह कार्य किया जा रहा है। इस सेवा से अस्पताल को काफी ख्याति प्राप्त हुई है। हमारे यहां इसी तरह बाल विकास केन्द्र भी है। जिसका कार्य पूर्ण रुप से बहन गीता मोहता देखती है, आप यूँ कह लें इनकी आत्मा बसतीहै इस कार्य में। मानसिक व शारिरीक रुप से अविकसित बच्चों के लिए यह केन्द्र है जहाँ बच्चों को टीकाकरण से लेकर उनको प्राथमिक शिक्षा के साथ-साथ शिक्षा की भी सुविधा उपलब्ध है। अभी हाल ही में संस्था का नया आईटीयू बन कर जनता की सेवा में उपलब्ध कराया गया। आईसीसीयू के अलावा वातानूकुलित केबिन भी उपलब्ध है। १९१३ में शुरु हुए इस अस्पताल से कई महान लोगों का भी सान्निध्य व सहयोग प्राप्त होता रहा है। जिसमें सुभाष चन्द्र बोस, जवाहरलाल नेहरु, जुगल किशोर बिड़ला, घनश्याम दास बिड़ला, वर्तमान में श्री कृष्ण कुमार बिड़ला के अलावा रघुनाथ जी बांगड़, राधाकृष्ण जी कानोड़िया, भागीरथ जी कानोडिया, प्रभुदयाल जी हिम्मतसिंहका जैसे महान समाजसेवियों का इस संस्था को भरपूर योगदान मिलता रहा। रानीगंज में भी हमारा ११० बेड का हास्पिटल है जिसकी देखभाल श्री गोविन्दराम जी खेतान एवं श्री विजय कुमान झुनझुनवाला जी करते है। कोलकाता से श्री चिरंजीलाल केजड़ीवाल जो रानीगंज अस्पताल का ही काम देखते हैं।

पहले हमारे यहां से देशभर में रिलिफ कैम्प लगाये जाते

धरोहर - २

थे। किसी भी प्रकार की आपदा आने पर सोसाइटी के कार्यकर्ता तुरंत राहत सामग्री लेकर वहां रवाना हो जाया करते थे, इन दिनों इस सेवा में कमी आयी है। फिर भी किसी राष्ट्रीय आपदा-विपदा पर आज भी हमारी यह संस्था कैम्प लगाने से नहीं चुकती। पैसा समाज देता है, धन की कमी हमें कभी नहीं खटकती, खटकती है तो कुछ कर्मठ कार्यकर्ताओं की कमी। आज समाज के नवयुवकों में समर्पित भाव से सेवा भावना कम नजर आती है, फिर भी हम सचेष्ट हैं। सोसाइटी को नये कार्यकर्ताओं एवं दानवीरों की हमेशा जरूरत रहती है, हमारा समाज के युवकों से यही संदेश है कि निःस्वार्थ भाव से इस संस्था की विभिन्न सेवाओं से जुड़े।आप बताते है कि अस्पताल के पास बगल में एक सात कट्ठा का प्लॉट खाली है जिसमें जल्द ही भवन निर्माण का कार्य करना है। वहां अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस चिकित्सा केन्द्र बनाने की योजना है जिसमें सीटी स्केन, एम आर आई, डायलेसिस जैसे आधुनिक उपकरण लगाये जायेंगे। अस्पताल का मुख्य ध्येय है मानव सेवा, जिसमें किसी भी प्रकार की कमी न हो यह प्रयास निरन्तर जारी रहेगा।

डॉ. एन. गुप्ता (मेडिकल डायरेक्टर) : आप १९९४ से इस अस्पताल से जुड़े। पहले आप **Resident Physician & Cardiologist** के रूप में कार्यरत थे, बाद में आप **Visiting Cardiologist** एवं वर्तमान में मेडिकल डायरेक्टर के रूप में कार्यरत है। आज मरीज बेहतर सेवा के साथ-साथ आधुनिक चिकित्सा भी चाहता है, वह ऐसी जगह की तलाश करता है जहाँ उसे इलाज के नाम से गुमराह न होना पड़े। संतोषजनक खर्च से कोई भी मरीज पीछे नहीं हटता। मरीज चाहता है कि एक ही केन्द्र में उसे सभी प्रकार की उचित व आधुनिक सुविधा उपलब्ध हो जायें। सोसाइटी इस दिशा में कार्यरत है। डॉक्टरों की सेवा के साथ-साथ आज के युग में नर्सिंग सुविधा का बहुत बड़ा प्रभाव मरीजों के ऊपर पड़ता है। हमें अन्य विकास के साथ-साथ नर्सिंग सेवा को और ज्यादा चुस्त-दुरुस्त बनाने पर ध्यान केन्द्रित करना होगा। आपका मानना है है कि उचित मुल्य पर योग्य चिकित्सा, यह भी एक प्रकार की समाज सेवा है। इससे हॉस्पीटल के आर्थिक ढांचे में भी सुधार होगा, दानदाताओं के ऊपर निर्भर रहने की प्रवृति को भी बदला जा सकेगा। डॉ. गुप्ता कहते हैं कि वर्तमान युग के अनुसार संस्था को आत्मनिर्भर होने की दिशा में भी ध्यान देने की जरूरत है। समय के अनुसार हमें परिवर्तन लाना ही चाहिए। लकीर का फकीर बनने से सेवा को योग्य नहीं बनाया जा सकता। समाज को हमसे अधिक अपेक्षा है, हमें उनकी सोच पर भी खरे उतरने की जरूरत है।

श्री गोपीराम बड़ोपोलिया : जो कि हरियाणा भवन के ट्रस्टी है एवं भूतपूर्व चेयरमैन भी रह चुके है। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी में आप विभागीय मंत्री हैं। बताते हैं कि यह समाज की पुरानी धरोहर है। लगभग १०० वर्षो से सेवा का निरंतर इतिहास इस अस्पताल के साथ जुड़ा हुआ है, शुद्ध विचारों से इस संस्था की नींव पड़ी है। श्री गोविन्दराम अग्रवाल, श्री केदारनाथ खण्डेलवाल व श्री परसराम सोमानी की सेवा अस्पताल के लिए व समाज के लिए बेमिसाल है।

श्री गौरीशंकर कांया : श्री कांया शहर की कई सामाजिक व साहित्यिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। रिलीफ सोसाइटी के अध्यक्ष भी रह चुके हैं, बताते हैं कि सोसाइटी की सेवा भावना को देखकर कोई भी व्यक्ति संस्था से प्रभावित हुए बगैर नहीं रह सकता। बाल विकास केन्द्र से तो आपका भावनात्मक लगाव भी रहा है। बताते हैं कि इन दिनों सोसाइटी में काफी सुधार के कार्य हुए हैं एवं प्रक्रिया जारी है।

श्री रोशनलाल धोना : आप संस्था से सन् १९८२ में जुड़े। प्रथम में आप संस्था के कलाकार स्थित भोजन विभाग की देखरेख करते थे, जिसमें लेबर समस्या एवं नित्य घाटे के चलते इस विभाग को बन्द करना देना पड़ा। संस्था के कई विभागों की समय-समय पर देख-रेख करते थे। बताते हैं कि समाज की यह संस्था सही मायने में एक धरोहर है। पूर्वजों ने जिस श्रद्धा से समाज की सेवा की वह आज के युवकों में देखने को मन तरसता है।

रानीगंज अस्पताल

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी अस्पताल (रानीगंज), मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी (कोलकाता) की एक शाखा है। रानीगंज शहर में अस्पताल की स्थापना की कल्पना जगन्नाथ झुनझुनवाला चैरिटी ट्रस्ट के तात्कालिक पदाधिकारियों ने की थी, जिन्होंने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए तात्कालिन ट्रस्ट की चल व अचल सम्पत्ति को सोसाइटी के नाम स्तानांतरित कर दिया। इस कल्पना को साकार रूप देने का श्रेय मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी (कलकत्ता) को है। प्रारम्भिक योजना के सहयोगी स्व० जगन्नाथ बेरीवाल, स्व. नन्दलाल जालान, बनवारी लाल भालोटिया,

धरोहर - २

रानीगंज शहर के बीचोंबीच अस्पताल का छह तल्ला भवन

श्री गोवर्द्धनलाल झुनझुनवाला, श्री चिरंजीलाल केजरीवाल, श्री गोविन्दराम खेतान, श्री जे. एन. गुप्ता एवं स्व. भानु प्रसाद खेतान के नाम विशेष उल्लेखनीय है।

रानीगंज अस्पताल की आधारशीला दिनांक २८ मार्च १९६१ को डा विधानचन्द्र राय न रखी। अस्पताल भवन का निर्माण कार्य दिनांक २ अगस्त १९६१ से सक्रिय रुप से चालू कर दिया गया जो १९६३ तक निरन्तर चलता रहा एवं अप्रैल १९६४ में अस्पताल जनता की सेवा के लिये खोल दिया गया। इस अस्पताल का विधिवत उद्‌घाटन २३ मार्च १९६८ को श्री कृष्ण कुमार बिड़ला ने किया। पश्चिम बंगाल के बर्दमान, बांकुड़ा, वीरभूम, पुरुलिया जिलों के अन्तर्गत यह अस्पताल आर्थिक रुप से कमजोर वर्ग व ग्रामवासियों की सेवा में संलग्न इस अस्पताल का आज

अस्पताल के मानद संयुक्त महामंत्री द्वय श्री गोविन्द राम खेतान एवं श्री विजय कुमार झुनझुनवाला

अपना ६ मंजिला भवन है। ८५ शैय्याओं के इस अस्पताल में पुरुष वार्ड व महिला वार्ड जिसमें अधिकाशतः सर्जिकल व प्रसूति रोगी की भरमार रहती है। मेडिकल, सर्जिकल एवं गाइनोकोलोजिकल रोगियों के लिए इस अस्पताल ने पूरे बर्दवान जिले में अपना विशेष स्थान बना लिया है। अस्पताल के पास ११ केबिन की भी व्यवस्था है। वर्तमान समय में अस्पताल में निम्न विभाग कार्यरत है। जनरल सर्जरी, आर्थोपेडिक सर्जरी, मेडिकल, मेटरनिटी एवं गाइनोकालोजिकल, पेडियेट्रिक्स, साइकेट्रिक, स्किन, दंत, ई.एन.टी., रेडियोलाजिकल, पैथोलाजी, इ.सी.जी., कैन्सर, परिवार कल्याण आल्ट्रासोनोग्राफी, स्पीच एवं आडियोलाजी विभाग के अलावा इमर्जेन्सी विभाग भी है।

अनुसुइया केजरीवाल कैन्सर सेन्टर : इस यूनिट का उद्‌घाटन १ जनवरी १९९५ में अनुसूइया केजड़ीवाल चैरिटी ट्रस्ट के सहयोग से शुरु किया गया। इस यूनिट मे कैन्सर सर्जीकिल व कैमोथेरैपी की भी व्यवस्था है। इस सेवा से अस्पताल ने इस क्षेत्र में काफी ख्याति भी प्राप्त की है। शहर के बीचोबीच एन.एस.बी. रोड पोस्ट रानीगंज-७१३३४७, जिला - बर्दमान (प. बंगाल) अस्पताल का पता है।

श्री विजय कुमार झुनझुनवाला जो इस अस्पताल के संयुक्त महामंत्री भी हैं एवं रोजाना हास्पिटल की देखरेख मे संलग्न है, बताते हैं कि ८४ शैय्याओं का यह अस्पताल समाजसेवियों के सहयोग से चल रहा है। शहर के बीचों बीच यह अस्पताल पूरे बर्दमान जिले में मध्य व निम्न आय वालों के लिए सेवा का केन्द्र बना हुआ है। अस्पताल के एक ओर संयुक्त सचिव श्री गोविन्द राम जी खेतान का भी इनको पूरा सहयोग मिलता है। वर्तमान में रानीगंज अस्पताल की जो स्थानीय समिति है वे इस प्रकार हैं : श्री गोविन्द राम खेतान व श्री विजय कुमार झुनझुनवाला दोनों मानद संयुक्त सचिव, श्री रामावतार बाजोरिया, श्री राजेन्द्र प्रसाद चौधरी, श्री दुर्गा प्रसाद सारांय, डॉ० जी. डी. राठी, श्री राजीव झुनझुनवाला, डा. रवीन्द्र कुमार चौधरी एवं श्रीमती मंजू सोंथलिया - सभी सदस्य। इस सूचना को तैयार करने में रानीगंज अस्पताल के श्री नरेन्द्रमणि त्रिपाठी एवं रानीगंज के एक युवा साथी श्री विकास चौधरी का पूरा सहयोग प्राप्त हुआ।

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी का बाल विकास केन्द्र

मानसिक और शारीरिक रुप से अविकसित शिशु अक्सर परिवार व समाज के लिए बोझ बन जाते हैं। जीवन की हर खुशी से ऐसे बच्चे वंचित हो जाते हैं। किसी का स्नेह व प्यार ही इनके जीवन में कुछ क्षण के लिए खुशियां लाते हैं। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के अन्तर्गत चलनेवाला बाल विकास केन्द्र विकलांग व अविकसित बच्चों में कुछ इसी तरह खुशियों का दीप जला रहा है। भारत में ऐसे बच्चों की संख्या ढाई करोड़ से अधिक है। इनमें पश्चिम बंगाल में यह संख्या ढाई लाख के ऊपर है। यह केन्द्र विकलांग बच्चों को संपूर्ण स्वाभाविक जीवन का आनन्द दिवलाने के लिए समर्पित भाव से काम कर रहा है। १५ जुलाई १९९२ को मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के बहिर्विभाग (आउटडोर) में बाल विकास

धरोहर - २

बाल विकास केन्द्र के बच्चे

केंद्र की शुरुआत हुई। प्रारंभ में केवल सात विकलांग बच्चे थे। इस केंद्र में बच्चों के विकास व रोगों के निदान के लिए कई तरह की सेवाएं उपलब्ध हैं। केंद्र में स्नायु, मानसिक और शारीरिक रोगों से विकलांग बच्चों को निजात दिलाने के लिए समुचित प्रशिक्षण दिया जाता है। स्नायु रोग से बच्चों के निदान की व्यवस्था उनके निवास पर ही यह केंद्र करता है। मूक, बधिर बच्चों को बोलने का प्रशिक्षण, सुशिक्षित डायटिनियश द्वारा बच्चों के संतुलित आहार के विषय में मां को आवश्यक जानकारी व अनुप्रेरणास, स्नायु रोग से ग्रस्त बच्चों को अपने अनुकूल एवं स्वतः सामान्य जीवन जीने के लिए प्रेरित करना एवं विकलांग बच्चों को समाज व परिवार के अन्य सदस्यों की तरह अपनाये जाने की प्रेरणा देना इस केंद्र का काम है। विकलांग बच्चों की देखरेख के लिए अभिभावकों को भी समुचित प्रशिक्षण दिया जाता है। केंद्र में इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अत्याधुनिक प्रणाली इस्तेमाल की जाती है। इसके अंतर्गत स्पेशल एजुकेटर, फिजियोथेरापिस्ट, सोशल वर्कर, पेडिट्रिशियन, न्यूरोलाजिस्ट स्पीचथिरेपिस्ट सहित दक्ष लोग इस काम को पूरा करने के लिए कार्यरत हैं, बच्चों की शिक्षा व परीक्षा, स्पीचथेरेपी, आडियोमेट्री सहित मुफ्त में विटामिन की गोलियां भी दी जाती हैं। स्पैस्टिक शिशु की अपनी समस्या होती है। ये शिशु साधारण विद्यालय मे शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकते। इनके लिए कुछ हद तक पढ़ाई की व्यवस्था भी है। इसके अंतर्गत शिशु को वर्णमाला पहचानने के साथ लिखने तथा रंगों एवं आकार, संख्या आदि की जानकारी दी जाती है। इसके साथ ही कई कार्यों की शिक्षा भी इन्हें दी जाती है। जैसे प्रींटींग कार्ड, लिफापा आदि बनाना। सेरिब्रल पाल्सी शिशु का अन्यतम लक्षण यह है कि वह किसी काम में अधिक देर तक मन नहीं लगा पाता है। इसके लिए संगीत या म्युजिकथेरेपी का बहुत महत्व है। आचरण की त्रुटियां सुधारने के लिए मानसिक विकलांग शिशु की सुप्त शक्ति को जगाने के लिए म्युजिकथेरेपी आवश्यक है। केंद्र में इसकी संपूर्ण व्यवस्था है। केंद्र मानता है कि ऐसे विकलांग शिशुओं को बोझ समझना समाज की भारी गलती है। इन्हें घर के अंदर बंद रखने का मतलब है एक संभावना की मृत्यु। इस बात को समझने में बाल विकास केंद्र समर्थ रहा है। इसका संचालन सोसाइटी के बहिर्विभाग की मंत्री गीता मोहता कर रही है। कोलकाता में अपने तरह का अकेला केंद्र है। २५० शैय्याओं से युक्त अस्पताल के वार्ड एवं केबिनों में सभी तरह के रोगग्रस्त मरीजों को, सर्जरी एवं मेडिसिन विभाग में दाखिल कर सुयोग्य डाक्टरों की देख-रेख में नगन्य व्यय में इलाज किया जाता है। सोसाइटी एक अलाभकारी समाज सेवी संस्था है, जिसका मूल मंत्र सेवा है। २५रु. मात्र बेड चार्ज (जिसका खर्च आता है २५० रु.) में रोगी को दोनों समय शुद्ध घी का भोजन, नास्ता, दूध, चाय, बिस्कुट और डाक्टरों, नर्सों की देख-रेख, आक्सीजन आदि सभी सुविधायें निःशुल्क उपलब्ध करायी जाती है। इसमें वार्षिक घाटा करीब एक करोड़ रु. आता है। सेवा पक्ष की यात्रा अनन्त है। इतनी सेवा के बावजूद बड़ाबजार के जनबहुल क्षेत्र में और अधिक सेवा की आवश्यकता है। अतः सोसाइटी ने अपनी खाली जमीन पर एक और अस्पताल बनाने का निर्णय किया है जो सभी के पारस्परिक सहयोग से ही पूर्ण होना सम्भव होगा। अस्पताल आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत पंजीकृत भी हैं।

मारवाड़ी आरोग्य भवन रांची

पिछले दिनों झारखड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन ने सोसाइटी को एक पत्र लिखकर कुछ स्पष्टीकरण मांगा था। इस संदर्भ में सोसाईटी के मानद प्रधानमंत्री श्री गोविन्द राम अग्रवाल ने बताया कि मारवाड़ी आरोग्य भवन, रांची में निश्चय ही स्थानीय समाज बन्धुओं का बहुत बड़ा योगदान रहा है। पूर्व में वहां की स्थानीय समिति एवं व्यवस्था प्रायः स्थानीय महानुभावों के हाथों में ही थी, परन्तु कुछ उपेक्षा एवं कुछ अन्यान्य कारणों से आरोग्य भवन की अधिकांश सम्पत्ति एवं कोठियों पर लोगों ने अनाधिकार कब्जा जमा लिया था, जो कोठियां खाली नहीं हो सकी, उन पर आज भी कानूनी कार्यवाही चल रही है। इन्हीं सब कारणों से तकरीबन १०-१२ साल पहले सोसाइटी की तत्कालीन कार्यकारिणी ने सर्वसम्मति से निर्णय लेकर सम्पत्ति को गणमान्य एव समाजोपयोगी संस्थाओं को कानूनी दस्तावेज बनाकर पट्टे पर हस्तांरित कर दिया है एवं हमारी जानकारी के अनुसार सभी संस्थाएं बहुत ही अच्छा कार्य कर रही है। साथ ही उन्होंने बताया कि वहाँ पर मारवाड़ी शब्द को न तो हटाया गया न ही हटाने की कोई बात है। आज भी उस स्थान पर मारवाड़ी शब्द अंकित है।

धरोहर - २

संक्षिप्त परिचय

श्री सीताराम केडिया

शम्भु चौधरी

श्री सीताराम केडिया के बिना मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी का परिचय अधूरा है और सोसाइटी के नाम के बिना केडियाजी का परिचय। केडियाजी को लोग सोसाइटी के भीष्म पितामह के नाम से जानते है। सोसाइटी के सबसे पुराने और समर्पित कार्यकर्त्ताओं में हैं केडिया जी। आज लगभग ९० वर्ष की उम्र में भी केडियाजी की स्मृत्तियों में सोसाइटी का रुप और सोसाइटी द्वारा किये गये सेवा कार्य उसी प्रकार जीवंत है, जैसे कि वे उस समय थे, जब एक उत्साही युवा कार्यकर्त्ता के रुप में तीस के दशक में वे पहलीबार सोसाइटी के साथ जुड़े। तबसे लेकर आज तक उनकी पहचान एक कर्मठ, सेवाभावी और निःस्वार्थ सामाजिक कार्यकर्त्ता के रुप में बनी हुई है।

केडियाजी ने सर्वप्रथम सोसाइटी का रसायनशाला विभाग, विभागीय मंत्री के रुप में सम्भाला। उसके बाद कार्यकारिणी के सदस्य और अस्पताल विभाग के मंत्री के बतौर सोसाइटी को अपनी दीर्घकालीन सेवायें अर्पित की। सोसाइटी के प्रधान मंत्री और अध्यक्ष का पदभार उन्होंने ग्रहण किया और उसके बाद उन्हें भीष्म पितामह के नाम से जाना जाने लगा। इसका मुख्य कारण एक ही है, स्वतत्रता सेनानी और प्रखर समाज सेवी होने के नाते वे अन्य संस्थाओं से भी जुड़े, मसलन देवघर स्थित आरोग्य भवन, अ. भा. मारवाड़ी सम्मेलन के मुखपत्र समाज विकास का सम्पादन आदि, परन्तु उनके जीवन की प्राथमिकता सदैव मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी ही रही। सोसाइटी के किसी पद पर रहे, अथवा नहीं उनका मन-प्राण सोसाइटी के प्रत्येक क्रिया कलापों और सेवा कार्यों के साथ जुड़ा रहा। देश के किसी भी भाग में प्राकृतिक आपदा-विपदा सोसाइटी ने सेवाकार्य किया, वहां साथी कार्यकर्त्ताओं का उत्साह बढाने और कार्य को सुचारु से अंजाम देने के लिये केडियाजी स्वयं जाते थे, सिर्फ गये और कार्य ही नहीं किया, स्थानीय नवासियों के बीच सोसाइटी और उसके कार्यकर्त्ताओं की उज्जवल छवि भी स्थापित की। किसी भी सेवा कार्य के लिये अन्यत्र जाते समय वे इस बात पर विशेष बल देते थे कि हर मंत्री और पदाधिकारी अपना मार्ग व्यय स्वयं वहन करें। यहाँ तक की रहने और खाने पीने की व्यवस्था का खर्च भी सोसाइटी के पास से नहीं लगे। उनका यह लक्ष्य रहता कि किसी भी सेवा कार्य हेतु प्राप्त दान राशि का पूरा सदुपयोग हो और उसका पैसा-पैसा और सहायतार्थ ही व्यय हो। सोसाइटी का कोई भी सेवा कार्य, पैसे अथवा दान के अभाव में कभी नहीं रुका। सोसाइटी द्वारा किया गया प्रत्येक सेवा कार्य वह चाहे बाढ सहायता हो या सूखा-राहत, अकाल हो अथवा भूकम्प, जातीय दंगे हों अथवा अधिवेशनों की भोजन व्यवस्था। उनकी देखरेख में कभी सोसाइटी के नाम पर और उसके कार्यकर्त्ताओं की साखपर आंच नहीं आई। अपने सह-कार्यकर्त्ताओं और साथियों के नाम को उन्होंने सदैव अपने नाम के आगे, अथवा समकक्ष रखा।

यह केडियाजी के स्वभाव की विनम्रता और उनकी निःस्वार्थ सेवा भावना ही थी जिसके चलते उनके साथियों को उनके साथ कार्य करने में कभी असुविधा नहीं होती थी। वे सदैव दूसरों की राय का सम्मान करते, परन्तु अपने सिद्धान्तों और सोसाइटी के हित के साथ उन्होंने कभी समझौता नही किया, न दूसरों को करने दिया। अस्पताल के कर्मचारियों, डाक्टरों, नर्सों और रोगियों के बीच वे समानरुप से आदर और विश्वास के पात्र बने रहे। अस्पताल मंत्री के अपने सुदीर्घ कार्यकाल के दौरान वे प्रतिदिन नियम से सुबह और शाम पूरे अस्पताल में घूमते थे, हर रोगी के पास स्वयं जाते, उसका हाल पूछते और उसे कोई असुविधा होती, उसे दूर करने का प्रयास करते थे। रोगियों की ही नहीं बल्कि अस्पताल के डाक्टरों और कर्मचारियों की भी उनपर जो असीम श्रद्धा आज भी है, उसका कारण केडिया जी की निःस्वार्थ सेवा भावना ही है।

यह केडिया जी के विशेष अधिकार प्रयोग के कारण ही था कि लगभग चार दशक तक उनके सक्रिय कार्यकाल में सोसाइटी का साधारण बेड चार्ज १७/- रुपये से अधिक कभी नहीं बढा। मात्र ११/- रुपये प्रतिदिन पर रोगियों को साफ सुथरा बेड और चादरें, दो वक्त का शुद्ध भोजन, चाय और बिस्कुट, डाक्टरों की सेवा और आक्सीजन मिलती रही।

इन दिनों बढती हुई उम्र और शारिरिक अक्षमता क कारण के केडिया जी सक्रिय रुप से सोसाइटी की गतिविधियों में संयुक्त नहीं हो पाते हैं पर उनका मानसिक और आत्मिक योगदान आज भी वैसा का वैसा है, उसमें कोई कमी नही आयी है। सोसाइटी के सम्बन्ध में कोई भी अप्रिय भूल सभी बात उनके कानों में पड़ती है तब उनका हृदय दुखित हो जाता है।

महानगर की अन्यान्य सेवा संस्थाओं से जुड़े सभी नये और पुराने कार्यकर्त्ताओं को वे साधुवाद का पात्र समझते है। सामाजिक कार्यों हेतु नयी पीढी की उदासीनता उनको अखरती है।

युगपथ चरण

कलकत्ता मारवाड़ी महिला सम्मेलन

राखी प्रदर्शनी का उद्घाटन

दैनिक विश्वमित्र के सम्पादक श्री प्रकाश चन्द्र अग्रवाल प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए

कलकत्ता मारवाड़ी महिला सम्मेलन द्वारा आयोजित तीन दिवसिय राखी प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए दैनिक विश्वमित्र सम्पादक श्री प्रकाश चन्द अग्रवाल में महिलाओं को देश के विकास में पुरुषो के साथ कन्धा से कन्धा मिलाकर योगदान करने की अपील की। मुख्य अतिथि पूर्व सांसद श्रीमती सरला महेश्वरी ने देश की प्रथम महिला राष्ट्रपति के निर्वाचन को देश की महिलाओं के लिये गर्व एवं प्रेरणा का विषय बताया। मुख्य वक्ता अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने कहा पहले तक पर्दे पर रहने वाली मारवाड़ी महिलाओं ने पिछले दशकों से समाज के हर क्षेत्र में उल्लेखनीय प्राप्ति की है। श्री रतन शाह ने बहनो से दहेज का विरोध करने का आह्वाहन किया एवं प० बंगास के अध्यक्ष श्री लोकनाथ डोकानिया ने महिलाओं को संगठित होने पर जोर दिया।

साल्टलेक संसद भवन में आयोजित प्रदर्शनी में तीस से अधिक स्टालों में सुन्दर एवं आकर्षक राखियों को सजाया गया था। उक्त अवसर पर कार्यक्रम को सफल बनाने में श्रीमती बिमला डोकानिया, श्रीमती अनिता सराफ, श्रीमती पुष्पा भदानी, श्रीमती मंजु सराफ, श्रीमती उर्मिला खेतान, श्रीमती मंजु डोकानिया, श्रीमती श्वेता टीबड़ेवाल, श्रीमती रेणु अग्रवाल, श्रीमती बिणा अग्रवाल, श्रीमती गायत्री शाह आदि ने सक्रिय भागीदारी ली।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

राजस्थानी सांस्कृतिक कार्यक्रम

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के तत्वाधान में विगत दिनांक ४ अगस्त ०७ को पटना स्थित श्री कृष्ण स्मारक भवन में राजस्थानी सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं सह-संयोजक का दायित्व श्री विनोद गोयल, श्री रविन्द्र अग्रवाल, श्री गणेश कुमार खेमका द्वारा लिया गया था। इनके नेतृत्व में गठित कार्यक्रम आयोजन समिति ने सफलतापूर्वक कार्यक्रम आयोजित कर पटना के लोगों को राजस्थानी लोक गीत एवं नृत्य से विभोर कर दिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन आचार्य किशोर कुणाल जी के द्वारा सम्पन्न हुआ। श्री किशोर कुणाल को दोशाला ओढ़ाकर श्री नूतन जी के द्वारा सम्मानीत किया गया। इस अवसर पर आगन्तुक अतिथियों का स्वागत श्री रविन्द्र अग्रवाल द्वारा किया गया। संयोजक विनोद गोयल द्वारा कार्यक्रम की जानकारी दी गई। अध्यक्ष श्री नथमल टिबड़ेवाल द्वारा सम्मेलन की जानकारी देने के साथ-साथ कार्यक्रम के बारे में बताया तथा भविष्य में इस प्रकार के कार्यक्रम करने की घोषणा की गई। कार्यक्रम का संचालन महामंत्री श्री बिनोद तोदी के द्वारा किया गया।

जोधपुर से आये कलाकारों के दल ने परिचय के उपरान्त श्री गणेश वन्दना एवं एक लोक गीत के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया व विभिन्न राजस्थानी गीत एवं नृत्यों से उपस्थित दर्शकों का मन मोह लिया। विशेष रुप से श्री सुरेश व्यास द्वारा प्रस्तुत घुमर नृत्य।

कलाकारो को सम्मेलन द्वारा यादगार स्वरुप भेंट श्री बादल चन्द्र अग्रवाल द्वारा दी गई तथा बिनोद तोदी के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ।

युगपथ चरण

मारवाड़ी महिला समिति, दरभंगा शाखा द्वारा तीज मेला

मारवाड़ी महिला समिति, दरभंगा शाखा द्वारा तीज मेला प्रदर्शनी सह बिक्री का आयोजन किया गया। इस आयोजन में सक्रिय भागीदारी में प्रमुख उर्मिला सुरेका, सुशीला पसारी, किरण पोद्दार, अंजु पसारी, शुभा बेरोलिया, उर्मिला पंसारी, शकुन्तला जसराजपुरिया, नीलम बेरोलिया

सम्मेलन भवन में स्वतंत्रता दिवस पालित

अखिल भारतवर्षीय मारवाडी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने मारवाड़ी सम्मेलन भवन में स्वतंत्रता की ६०वीं वर्षगांठ पर राष्ट्रीय पताका का उत्तोलन करते हुए कहा कि देश की अखंडता एवं सुदृढ़ता के लिए हमें हर समय तैयार रहना है। आजादी हमारे पूर्वजों की बलिदान का फल है। उस बलिदान को हमें जीवित रखना है। प्रत्येक भारतवासी को यह शपथ लेनी होगी की इसकी अखंडता को बनाकर रखेंगे। इस अवसर पर उपस्थित थे : श्री जुगलकिशोर जैथलिया, श्री लोकनाथ डोकानिया, श्री घनश्याम दास गुप्ता, प० बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के नव निर्वाचित अध्यक्ष, श्री विश्वनाथ सुलतानिया, श्री ओम लाडिया, श्री अनिल डालमिया, एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति।

बिहार : झंडोतोलन कार्यक्रम

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन एवं मारवाड़ी युवा मंच के द्वारा सम्मेलन कार्यालय भवन के नीचे झंडोत्तोलन किया गया। उक्त अवसर पर सम्मेलन के प्रादेशिक अध्यक्ष श्री नथमल टिबड़ेवाल ने अपने सम्बोधन में कहा कि यह प्रसन्नता की बात है कि आज हमलोग आजादी के ६० वें वर्ष पूरे कर रहे हैं। आजाद भारत की कीमत हजारों देश वासियों ने अपनी जान देकर चुकाई है। हम उन शहीदों को नमन करते हैं। हम यह प्रतिज्ञा करते हैं कि ६० वर्ष बाद भी देश के करोड़ों लोगों को जिन्हें आजादी का सही मायने में लाभ नहीं मला है, उन्हें, उनके सपनों को पूरा करने में मददगार होंगे।

मारवाड़ी सम्मेलन, कानपुर शाखा

शरद मेला २००७

संस्था के पदाधिकारी लोकगायिका डा० शिवानी मातनहेलिया को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए। गणमान्य अतिथि में डा० गौरहरि सिंहानिया, श्री श्रीप्रकाश जायसवाल (केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री), श्री ओमप्रकाश गोयनका (प्रान्तीय अध्यक्ष), श्री सलिल विश्नोई (विधायक) एवं श्री गोपाल सूतवाला (प्रान्तीय महामंत्री)

मारवाड़ी सम्मेलन कानपुर शाखा द्वारा गोद लिये स्कुल में बच्चों को किताब कापी, ड्रेस वितरण करते हुए

श्री अरुण गुप्ता वाणिज्य व उद्योग विभाग के राष्ट्रीय सह-संयोजक नियुक्त

श्री अरुण गुप्ता भारतीय जनता पार्टी के वाणिज्य व उद्योग विभाग के राष्ट्रीय सह-संयोजक पद पर नियुक्त किए गए हैं। श्री गुप्ता शहर की कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं आप सम्मेलन के राष्ट्रीय सह-मंत्री पद पर भी कार्यरत हैं। बधाई।

युगपथ चरण

डा० गौतम अग्रवाल ने इस वर्ष आसाम मेडिकल कालेज से एम. डी. (शिशु) की परिक्षा में सफलता प्राप्त की है। डा० गौतम नगाँव (आसाम) निवासी मदन गोपाल-उर्मिला भड़ेच के सुपुत्र है।

डा० सुजाता अग्रवाल ने इस वर्ष गुवाहाटी मेडिकल कालेज से एम. डी. (प्रसूति) की परिक्षा में सफलता प्राप्त की है। डा० सुजाता नगाँव (असम) निवासी डा० गौतम अग्रवाल की धर्म पत्नी तथा मदन गोपाल-उर्मिला भड़ेत की पुत्रवधू है।

श्री रोहित गोयनका सुपुत्र माण्डावा के श्री गोविन्द राम गोयनका ने सी. पी. टी. परिक्षा में ९९.८८ प्रतिशत अंक प्राप्त किए - बधाई।

श्री रमेश कुमार बंग
युवा वैश्य महा सम्मेलन के उपाध्यक्ष मनोनीत

सुप्रसिद्ध युवा समाज सेवी रमेश कुमार बंग को **अखिल भारवर्षीय युवा वैश्य महासम्मेलन** का राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया है। श्री बंग ने अनेक राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय सामाजिक संस्थाओं को अपनी समर्पित सेवाएँ प्रदान की है। पूर्व में आप अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी युवा संगठन के उपाध्यक्ष, राजस्थानी स्नातक संघ के अध्यक्ष, आं. प्रा. माहेश्वरी युवा संगठन के अध्यक्ष एवं आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी युवा मंच के अध्यक्ष रहे हैं। वर्तमान में आप दि ए. पी. महेश को-आपरेटिव अर्बन बैंक लिमिटेड के चेयरमैन, आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन एवं आन्ध्र प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष, श्री आदित्य विक्रम बिड़ला मेमोरियल व्यापार सहयोग केन्द्र के प्रबन्ध समिति सदस्य, माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट के प्रबन्ध न्यासी, आन्ध्र प्रादेशिक माहेश्वरी सभा ट्रस्ट के संयोजक एवं महर्षि वेद व्यास प्रतिष्ठान पुणे के न्यासी एवं ए. पी. स्टेट को-आपरेटिव अर्बन बैंकस् फेडरेशन लि. के निदेशक है।

विशुदानन्द हॉस्पिटल इंटेसिव कार्डियक केयर यूनिट

मेरे बाद मेरे पुत्र का भी सहयोग मिलेगा - श्री बुधिया

कोलकाता ८ जुलाई। श्री विशुद्धानन्द हास्पिटल एण्ड रिसर्च इंस्टीच्यूट में कार्डियक केयर यूनिट (आईसीसीयू) खुल गया है,

आईसीसीयू और प्रथम तल्ला आउटडोर विभाग के उद्घाटन के लिए आज आयोजित एक समारोह में समाज के प्रबुद्ध लोग शामिल हुए। समारोह के प्रधान अतिथि और समाज के सुपरिचित समाज सेवी श्री हरिप्रसाद बुधिया ने अस्पताल की सेवाओं और श्री पुष्कर लाल केडिया की सेवा के प्रति समर्पण भावना की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

श्री बुधिया ने कहा कि मेरा इस हास्पिटल के लिए हमेशा सहयोग रहेगा और मेरे बाद मेरे पुत्र श्री संजय बुधिया का मुझ से अधिक सहयोग मिलता रहेगा। राजस्थानी समाज के प० बंगाल विधानसभा में एक मात्र विधायक श्री दिनेश बजाज ने हास्पिटल को १० लाख रुपये विधायक कोटे से देने का ऐलान किया।

विधायक श्री परिमल विश्वास, पारषद द्वय श्रमती सुनीता झंवर एवं श्रीमती भारती झा ने अपना वक्तव्य रखते हुए सहयोग का आश्वासन दिया। पं० श्रीकान्त शर्मा बाल व्यास ने पूजन हवन करवाया व हास्पिटल के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। धन्यवाद ज्ञापन करते हुए श्री पुष्कर लाल केडिया ने अपील की कि लोग किसी भी संस्था का नाम भगवान या किसी संत के नाम से शुरु करें। कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री पूनमचन्द जैन, सुरेन्द्र अग्रवाल, अविनाश गुप्ता, बलदेव केडिया व श्रवण अग्रवाल की सक्रिय भुमिका रही।

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा

प्रोफेसनल सेल (पूर्वांचल) का सेमीनार सम्पन्न

विगत रविवार १९ अगस्त २००७ को अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के पेशेफेसनल सेल (पूर्वांचल) द्वारा माहेश्वरी सभा श्रीरामपुर अंचल, रिसड़ा के आतिथ्य में एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ केन्द्रीय संयोजक श्री रामेश्वर लाल काबरा ने भगवान महेश को माल्यार्पण एवं प्रदीप प्रज्ज्वलित कर तथा सचिव (पूर्वांचल) श्री देव किशन करनानी ने महेश स्तुति कर किया, संयोजक (पूर्वांचल) श्री जगदीश चन्द्र एन० मून्दड़ा ने विद्वान वक्ताओं एवं प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए बताया कि वैश्वीकरण एव उदारीकरण के इस युग मे होने वाले परिवर्तन एवं युवाओ के अवसर, इस परिचर्चा का मुख्य उद्देश्य है। सुप्रसिद्ध विनियोग एवं प्रतिभूति विशेषज्ञ श्री विनोद कुमार गोयल ने आज के आर्थिक परिदृश्य पर प्रकाश डाला एवं अपने धन निवेश के प्रति सावधानी बरतने की सलाह दी एवं आशंका जताई कि कोरिया की तरह भारत में भी निवेशकों को विदेशी कम्पनीयां लुट सकती है। श्री जगदीश चन्द्र सोनी ने वस्त्रोद्योग में डिजाइन विशेषज्ञों की कमी तथा विपणन कर्ताओं के अभाव का जिक्र करते हुए युवा वर्ग से इसका लाभ उठाने को कहा, श्री जगमोहन दास पलोड़, सह संयोजक (पूर्वांचल) ने परिवर्तित अर्थव्यवस्था का स्वागत करते हुए समाज बंधुओं को नए आयाम स्थापित करने में योगदान देने का आह्वान किया, आयोजक सभा के अध्यक्ष श्री अंजनी कुमार सोमानी ने सेमीनार की सफलता हेतु वक्ताओं एवं प्रबुद्ध श्रोताओ को धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम को सफल करने मे सर्वश्री रिखब दास डागा, राजेश बियानी, विनोद राठी, राजेश चाण्डक, राजेन्द्र काबरा एवं हरेन्द्र माहेश्वरी का सहयोग उल्लेखनीय रहा। कार्यक्रम का सफल संचालन सचिव श्री देवकिशन करनानी ने किया

असमः हिन्दी भाषियों की सुरक्षा हेतु स्मार पत्र

असम: हिन्दी भाषियों की सुरक्षा हेतु स्मार पत्र मारवाड़ी सम्मेलन ने कार्बी-आंग्लांग में हुए नरसंहार के विरोध में असम में प्रवास कर रहे हिन्दीभाषियों की सुरक्षा हेतु असम के मुख्यमंत्री तरुण गोगोई से मिलकर स्मार-पत्र सौंपा। सम्मेलन के प्रादेशिक अध्यक्ष विजय कुमार मंगलूनिया, मारवाड़ी युवा मंच के प्रान्तीय अध्यक्ष अरुण कुमार अग्रवाल असमिया हिन्दीभाषी समन्वय समिति के प्रमोद स्वामी द्वारा हस्ताक्षरित स्मार-पत्र में हाल ही में कार्बी-आंग्लांग में मारे गये लोगों के परिजनों में से प्रत्येक को पांच लाख रुपयो का मुआवजा तथा परिवार के एक व्यक्ति को नौकरी का मांग की गई है। स्मार-पत्र में सभी राजनीतिक दलों को एक साथ बैठकर स्थिति की गंभीरता को समझते हुए इसके समाधान की दिशा में चिंतन करने हेतु भी कहा गया है। साथ ही राज्य के विभिन्न संगठनों से भी स्थिति मे सुधार लाने की दिशा में काम करने की अपील की गई है।

श्री पुष्करलाल केडिया का नागरिक अभिनन्दन

वृहत्तर फैन्सी बजार साहित्य सभा, गुवाहाटी द्वारा श्री पुष्करलाल केडिया का नागरिक अभिनन्दन करते हुए संस्था के अध्यक्ष श्री रामनिरंजन गोयनका

wonder images

Leading solvent printing unit for outdoor & indoor ad.

- Crystal clear digital printing with vutek machine, on Flex, SAV, One way vision, UK Media, Mesh, Lamination, Canvas, etc.
- 40,000 sq ft per day production capacity.
- No compromise in quality.

Wonder images Pvt. Ltd.

2 Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph : 2225 1862/3/4/5, 9830425990, Fax : 91-33-2225 1866
email : wonder@cal2.vsnl.net.in

REGISTERED Postal Registration
No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2007-09
Date of Publication - 29th September 2007
RNI Regd. No. 2868/68

वैवाहिक आचार संहिता

- मिलनी सबकी ४ रुपया, चांदी छोड़ कागज का रुपया।
- पानी से पापड़ तक अधिकतम २५ व्यंजन का नियम लागू हो।
- विवाह में दोनों पक्ष को मिलाकर यथासंभव सीमित उपस्थिति हो।
- कम खर्च वाले साधारण निमंत्रण पत्र छपने चाहिए।
- सजन-गोठ बन्द हो।
- नेग का कार्यक्रम एक ही होना चाहिए।
- सगाई/विवाह की मिठाई का खर्च वर पक्ष ही वहन करें।
- बैण्ड, सड़क पर नाच, वैवाहिक समारोहों में शराब का उपयोग वर्जित हो।
- रात्रि के विवाह की वनिस्पत दिन के विवाह को प्राथमिकता दी जाए।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

१५२ बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७००००७

फोन - २२६८-०३१९

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : samajvikas@gmail.com